3 सुंदरकांड का पाठ करने से दूर हो जाते हैं सभी तरह...
4 फरीदाबाद राजेश चेची, डीसीपी (जीआरपी) के आगमन...
7 Sleep well, cut belly fat to reduce breast cancer risk

राष्ट्रीय सरोकारों से परिपूर्ण समाचार पत्र

मासिक समाचार पत्र

अतुल्य लोकतंत्र

Email : atulyaloktantra09@gmail.com

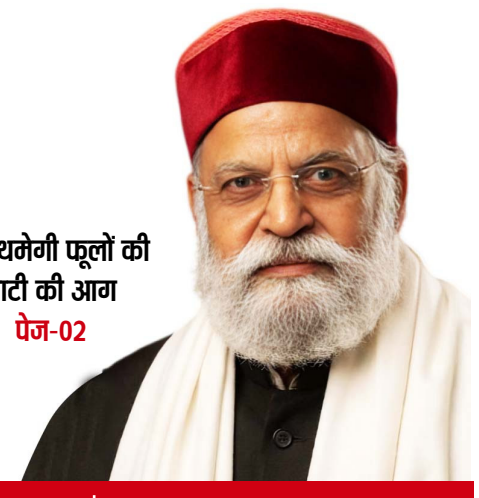

कब थमेगी फूलों की घाटी की आग
पेज-02

वर्ष : 10 | अंक : 11 | फरीदाबाद, जनवरी, 2026 | संपादक : दीपक कुमार शर्मा | RNI NO. HARBIL/2016/74676 | Mob.: 9899222656, 8527791656 | मूल्य : 15 रुपए | पृष्ठ : 8

राष्ट्रीय एकता और अखंडता का पर्व

अतुल्य लोकतंत्र/ब्यूरो

भारत एक विशाल और विविधताओं से भरा देश है। यहाँ अनेक धर्म, भाषाएँ, संस्कृतियाँ और परंपराएँ देखने को मिलती हैं, फिर भी हम सभी भारतीय एक सूत्र में बंधे हुए हैं। भारत के राष्ट्रीय पर्व हमें इस एकता और देशभक्ति की भावना को मजबूत करने का अवसर देते हैं। 26 जनवरी, जिसे हम गणतंत्र दिवस के रूप में मनाते हैं, ऐसा ही एक अत्यंत महत्वपूर्ण राष्ट्रीय पर्व है।

•गणतंत्र दिवस का ऐतिहासिक महत्व

26 जनवरी 1950 का दिन भारतीय इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखा गया है। इसी दिन भारत का संविधान पूर्ण रूप से लागू हुआ और भारत एक संपूर्ण गणराज्य बना। इससे पहले भारत 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्र तो हो गया था, लेकिन देश का शासन अंग्रेजों के बनाए कानूनों के अनुसार चल रहा था। जब 26 जनवरी 1950 को संविधान लागू हुआ, तब भारत को अपना स्वयं का कानून और शासन प्रणाली प्राप्त हुई। भारतीय संविधान का निर्माण डॉ. भीमराव अंबेडकर के नेतृत्व में किया गया। यह संविधान दुनिया का सबसे बड़ा लिखित संविधान है। इसमें नागरिकों के अधिकारों, कर्तव्यों और सरकार की शक्तियों का स्पष्ट वर्णन किया गया है। 26 जनवरी को संविधान लागू कर भारत ने यह सिद्ध कर दिया कि वह एक लोकतांत्रिक, धर्मनिरपेक्ष और गणराज्य देश है।

•26 जनवरी का विशेष महत्व क्यों?

26 जनवरी की तिथि इसलिए चुनी गई क्योंकि 26 जनवरी 1930 को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने पूर्ण स्वराज की घोषणा की थी। उस समय यह निश्चय किया गया था कि भारत पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त करेगा। इसलिए जब संविधान लागू करने की तिथि तय की गई, तो 26 जनवरी को ही चुना गया, ताकि उस ऐतिहासिक संकल्प को सम्मान दिया जा सके।

•गणतंत्र दिवस का राष्ट्रीय आयोजन

हर वर्ष 26 जनवरी को देशभर में गणतंत्र दिवस बड़े उत्साह और गर्व के साथ मनाया जाता है। इस दिन का मुख्य आयोजन नई दिल्ली के कर्तव्य पथ पर होता है। यहाँ भारत के राष्ट्रपति राष्ट्रीय ध्वज फहराते हैं और भव्य परेड का निरीक्षण करते हैं। परेड में भारतीय सेना, नौसेना और वायुसेना के जवान अपनी शक्ति, अनुशासन और साहस का प्रदर्शन करते हैं। परेड के दौरान विभिन्न राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की झांकियाँ निकाली जाती हैं। ये झांकियाँ भारत की सांस्कृतिक विविधता, ऐतिहासिक धरोहर और विकास कार्यों को दर्शाती हैं। इसके अलावा स्कूली बच्चे, एनसीसी कैडेट्स और कलाकार भी परेड में भाग लेते हैं, जो पूरे वातावरण को देशभक्ति से भर देते हैं।

•वीरता पुरस्कार और सम्मान

गणतंत्र दिवस के अवसर पर देश के वीर नागरिकों और सैनिकों को वीरता पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं। इनमें परमवीर चक्र, महावीर चक्र, वीर चक्र और अशोक चक्र जैसे सम्मान शामिल हैं। ये पुरस्कार उन लोगों को दिए जाते हैं जिन्होंने देश की रक्षा या समाज की सेवा में असाधारण साहस और त्याग का परिचय दिया हो। यह हमें प्रेरित करता है कि देशसेवा सर्वोपरि है।

•स्कूलों और संस्थानों में गणतंत्र दिवस

गणतंत्र दिवस केवल राजधानी तक ही सीमित नहीं रहता, बल्कि यह पूरे देश में मनाया जाता है। स्कूलों, कॉलेजों, सरकारी कार्यालयों और संस्थानों में झंडारोहण किया जाता है। छात्र-छात्राएँ देशभक्ति गीत, नृत्य, भाषण और नाटक प्रस्तुत करते हैं। शिक्षक बच्चों को संविधान, स्वतंत्रता सेनानियों और राष्ट्रीय मूल्यों के बारे में बताते हैं। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य बच्चों के मन में देशप्रेम, अनुशासन और जिम्मेदारी की भावना पैदा करना होता है। बच्चे तिरंगे को सलाम कर राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों को समझते हैं।

•संविधान और नागरिकों के कर्तव्य

गणतंत्र दिवस हमें हमारे संविधान की महत्ता का एहसास कराता है। संविधान हमें मौलिक अधिकार देता है, जैसे - समानता का अधिकार, स्वतंत्रता का अधिकार, शिक्षा का अधिकार और धार्मिक स्वतंत्रता। लेकिन इसके साथ ही यह हमें कुछ मौलिक कर्तव्य भी सौंपता है, जैसे - राष्ट्रीय ध्वज और राष्ट्रगान का सम्मान करना, देश की एकता और अखंडता बनाए रखना तथा सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा करना। एक सच्चा नागरिक वही होता है जो अपने अधिकारों के साथ-साथ अपने कर्तव्यों का भी ईमानदारी से पालन करे।

•गणतंत्र दिवस का संदेश

गणतंत्र दिवस हमें यह संदेश देता है कि देश का भविष्य उसके नागरिकों के हाथ में होता है। हमें जाति, धर्म और भाषा से ऊपर उठकर राष्ट्रहित में सोचना चाहिए। यह दिन हमें स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान को याद दिलाता है, जिनकी वजह से आज हम स्वतंत्र और सुरक्षित जीवन जी रहे हैं। आज के समय में जब देश विकास की ओर अग्रसर है, तब हम सभी का कर्तव्य है कि ईमानदारी, परिश्रम और एकता के साथ देश के विकास में योगदान दें।

•उपसंहार

अंत में कहा जा सकता है कि 26 जनवरी - गणतंत्र दिवस केवल एक त्योहार नहीं, बल्कि हमारे लोकतंत्र और संविधान की आत्मा का उत्सव है। यह दिन हमें गर्व के साथ यह कहने का अवसर देता है कि हम दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के नागरिक हैं। आइए, हम सभी इस गणतंत्र दिवस पर यह संकल्प लें कि हम अपने देश के प्रति सच्चे, जिम्मेदार और ईमानदार नागरिक बनेंगे और भारत को एक मजबूत, समृद्ध और विकसित राष्ट्र बनाने में अपना योगदान देंगे।

प्रदूषण बनाम टैरिफ

अतुल्य लोकतंत्र/ब्यूरो

दावोस में हाल ही में संपन्न वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम में भारतीय अर्थव्यवस्था की चर्चा के दौरान यह बात शिद्दत से उठी कि भारत पर ट्रंप के टैरिफ के मुकाबले प्रदूषण ज्यादा घातक असर दिखा रहा है। हार्वर्ड यूनिवर्सिटी की प्रोफेसर और आईएमएफ की पूर्व डिप्टी मैनेजिंग डायरेक्टर गीता गोपीनाथ ने इकोनॉमिक फोरम में चर्चा के दौरान कहा कि व्यापार बढ़ाने की कवायद में अकसर व्यापारिक बाधाओं और नियमों की बात की जाती है, लेकिन आर्थिक तरक्की में बाधक प्रदूषण जैसे घटकों की चर्चा कम ही होती है। चर्चा में भारत में प्रदूषण की भयावहता का जिक्र करते हुए कहा गया कि भारत पर ट्रंप द्वारा लगाए गए टैरिफ के मुकाबले प्रदूषण का असर ज्यादा घातक व दूरगामी है। फोरम में साल 2022 में विश्व बैंक के एक अध्ययन का हवाला दिया गया कि भारत में हर साल सत्रह लाख लोगों की मौत प्रदूषण से हो जाती है। ये आंकड़ा भारत में मरने वालों का अट्ठारह फीसदी बैठता है। जो कहीं न कहीं आर्थिक गतिविधियों को बाधित करने के साथ ही बहुमूल्य जीवन भी लीलता है। कमोबेश यह घातकता जीडीपी पर भी असर डालती है। निस्संदेह, प्रदूषण से होने वाली मौतों से केवल एक परिवार ही नहीं, पूरे देश पर प्रभाव पड़ता है। देश की श्रम शक्ति का ह्रास होता है और आर्थिकी पर दूरगामी प्रभाव होते हैं। वहीं आर्थिकी पर चर्चा के दौरान यह मुद्दा भी उठा कि प्रदूषण के चलते निवेशकों के भरोसे पर भी दुष्प्रभाव होता है। इससे निवेशकों का आकर्षण कम होता है। निस्संदेह, निवेशक के मन में भय होता है कि यदि वह इसी प्रदूषित वातावरण में रहता है तो यह उसके लिये यह घातक हो सकता है। इसमें दो राय नहीं कि प्रदूषण की भयावह स्थिति दुनिया में किसी भी देश की छवि को नुकसान जरूर पहुंचाती है। जिससे निवेशक बेहतर विकल्प की तलाश में अन्य देशों का रुख कर सकते हैं। ऐसे में प्रदूषण के संकट को युद्धस्तर पर निपटाने की जरूरत महसूस की जा रही है। निस्संदेह, भारत में प्रदूषण का संकट एक यथार्थ है। यह भी हकीकत है कि देश के नीति-नियंता प्रदूषण संकट के समाधान को लेकर गंभीर नजर नहीं आते। जब-जब प्रदूषण संकट गहराता है तो आग लगने पर कुआं खोदने की कवायद की जाती है। कोर्ट की फटकार व नियामक एजेंसियों की सख्ती के बाद शासन-प्रशासन हरकत में आता है। लेकिन गीता गोपीनाथ के तर्कों के कुछ अर्धसत्य भी हैं। इसमें दो राय नहीं कि अमेरिका के इशारे पर काम करने वाली वैश्विक एजेंसियां विकासशील देशों को लेकर अपनी सुविधा के हिसाब से प्रतीक-प्रतिमान गढ़ती रही हैं। आईएमएफ जैसी संस्थाओं को अमेरिकी कूटनीति के हथियार के रूप में इस्तेमाल किया जाता रहा है। यहां तक कि इन संस्थाओं में उच्च पदों पर बैठे भारतीय अधिकारी भी अमेरिका के सुरों में गाते नजर आते हैं। सवाल गोपीनाथ के बयान के समय का भी है जब अमेरिका न केवल भारत पर अन्यायपूर्ण टैरिफ लगा रहा है बल्कि द्विपक्षीय व्यापार समझौते को भी अपनी शर्तों के अनुरूप अंतिम रूप देने का प्रयास कर रहा है। बहरहाल, इसके बावजूद यह एक हकीकत है कि हमारे देश में प्रदूषण संकट बड़ा है, जिसे देश के नीति-नियंता गंभीरता से नहीं ले रहे हैं। जिसके चलते करोड़ों भारतीयों को अपनी जमा-पूंजी अपने व परिवार के उपचार में खर्च करनी पड़ती है।

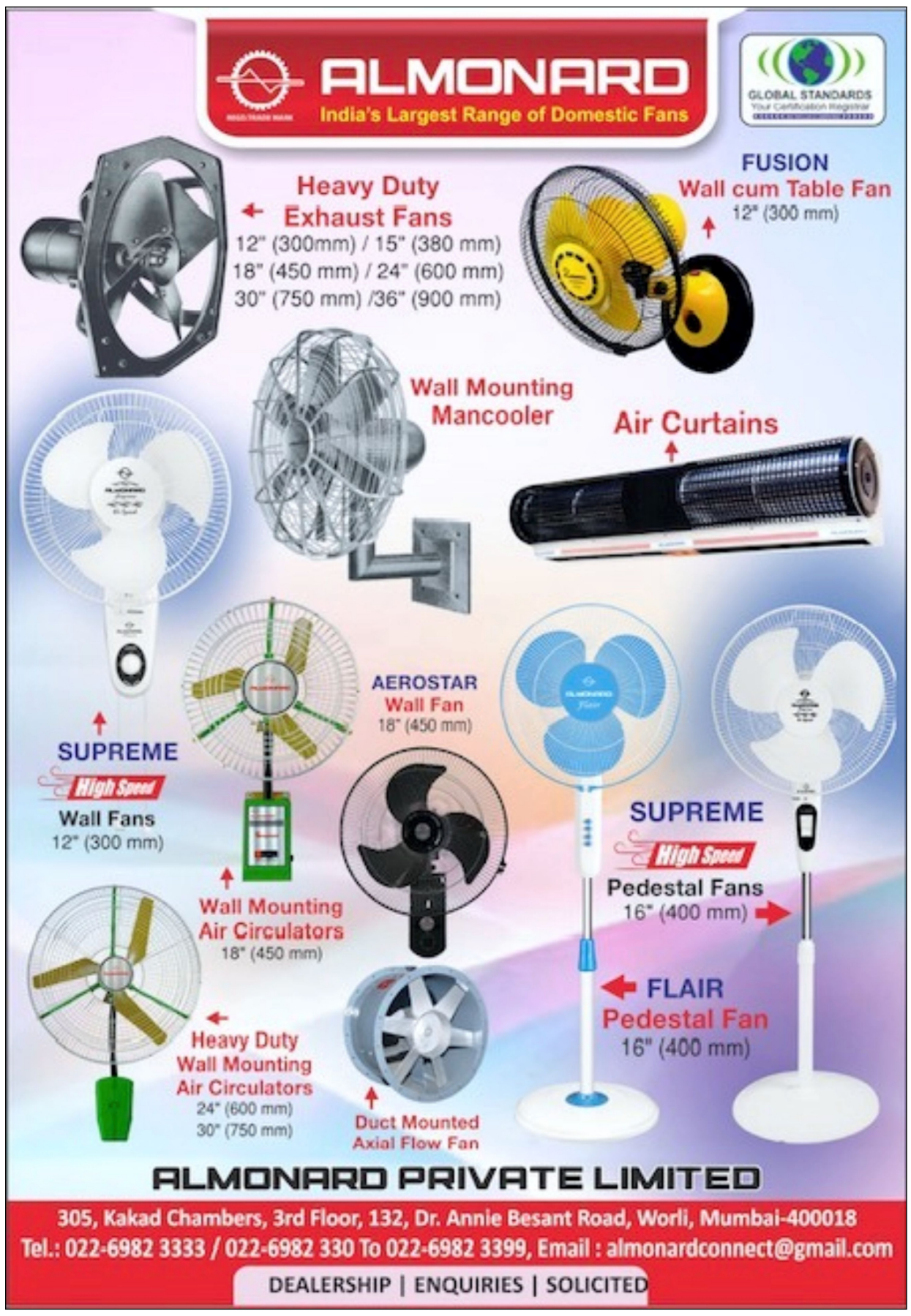

संपादकीय

प्रशिक्षित अग्निवीरों के लिए नए अवसर

सेना में अग्निवीर योजना के क्रियान्वयन के वक्त इनकी अल्पकालिक सेवा और सेवानिवृत्ति के बाद उनके भविष्य को लेकर तमाम तरह की आशंकाएं व्यक्त की जा रही थीं। लेकिन अब धीरे-धीरे कई आशंकाएं निर्मूल साबित हो रही हैं। प्रशिक्षित अग्निवीरों के लिये नये-नये अवसर बन रहे हैं। हाल ही में हरियाणा सरकार ने राज्य में गठित होने जा रही डिजास्टर रिस्पॉन्स फोर्स में अग्निवीरों को प्राथमिकता देने की घोषणा की है। यह सुखद ही है कि अग्निपथ योजना के पहले बैच के सेवा काल की समाप्ति से पहले हरियाणा सरकार ने उनके समायोजन की पहल की है, जिसका अनुकरण देश के अन्य राज्यों को भी करना चाहिए। जिससे इस कुशल-प्रशिक्षित युवा शक्ति की ऊर्जा के बेहतर इस्तेमाल की पहल हो सके। दरअसल, हरियाणा में स्टेट डिजास्टर रिस्पॉन्स फोर्स में अग्निवीरों को वरीयता देने की बात कही गई है। निश्चय ही इस

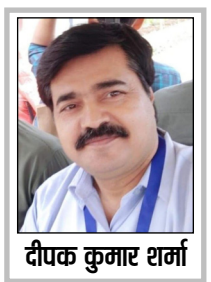

दीपक कुमार शर्मा

कदम से जहां अग्निवीरों की नई पीढ़ी सामने आएगी, वहीं राज्य को इनके कुशल प्रशिक्षण का लाभ मिल सकेगा। यह भी हकीकत है कि बदलते वक्त के साथ आपदाओं की पुनरावृत्ति व घातकता बढ़ रही है, उससे जूझने के लिये भी अनुभवी व प्रशिक्षित बल की सख्त जरूरत महसूस की जा रही है। जो एक स्थायी, पेशेवर और पूर्णकालिक बल के जरिये ही संभव हो सकता है। दरअसल, हरियाणा में सरकार ने भरोसा दिलाया है कि राज्य में गठित होने वाली एसडीआरएफ बटालियन में अधिकतम संख्या अग्निवीरों की ही होगी। विश्वास किया जा रहा है कि अग्निवीरों वाली एसडीआरएफ प्राकृतिक आपदाओं मसलन बाढ़,भूकंप, औद्योगिक दुर्घटनाओं, अग्निकांडों व रासायनिक आपदाओं की चुनौती का सफलता से मुकाबला कर सकेगी। माना जा रहा है कि अग्निवीरों को मिला कठोर प्रशिक्षण आपातकालीन स्थितियों से मुकाबले में मददगार साबित होगा। दरअसल, ऐसी चुनौतीपूर्ण स्थितियों में तीव्र गति से कार्रवाई करते नागरिकों के जीवन की रक्षा करने की प्राथमिकता होती है। जो प्रशिक्षित और अनुभवी टीम के द्वारा ही संभव हो सकता है। कहा जा रहा है कि राज्य की सभी डिविजनों में क्विक रिस्पॉन्स टीम तैनात की जाएंगी। उल्लेखनीय है कि हाल ही में उत्तर प्रदेश में नोएडा में धुंध के चलते हुई एक सड़क दुर्घटना में एक युवा इंजीनियर की मौत हुई। बेटे को मौत के मुंह में समाते देख असहाय पिता ने पुलिस से मदद मांगी। लेकिन मदद के लिये पहुंची टीम के पास इस चुनौती का मुकाबला करने के लिये जरूरी उपकरण व अनुभव नहीं था। ऐसे में युवा इंजीनियर ने पिता के सामने ही डूबकर दम तोड़ दिया। दुर्घटना के बाद तमाम लोगों के खिलाफ कार्रवाई की जा रही है। घटना के बाद आपदा राहत बल को प्रशिक्षित करने और जीवन रक्षा के तमाम उपकरण उपलब्ध कराने की जरूरत महसूस की जा रही है। ऐसे में हरियाणा में एसडीआरएफ बटालियन के गठन और उसमें प्रशिक्षित व अनुभवी अग्निवीरों की तैनाती की घोषणा के बाद उम्मीद जगी है कि हरियाणा की सुरक्षा कुशल हाथों में रहेगी। तब प्राकृतिक, औद्योगिक व आगजनी आदि की घटनाओं में जन-क्षति को कम करने में मदद मिल सकेगी। हालांकि, अब तक हरियाणा में आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में आईआरबी की बटालियन पहले ही नोडल डिजास्टर रिस्पॉन्स एजेंसी के रूप में सक्रिय रही है। इसके अंतर्गत सैकड़ों कर्मचारियों को आपदाओं से निबटने के लिये प्रशिक्षण दिया जा चुका है। लेकिन आपदाओं व दुर्घटनाओं की घातकता के मद्देनजर स्पेशल व स्थायी बल की आवश्यकता लगातार महसूस की जाती रही है। विश्वास किया जाना चाहिए कि अनुभवी नेतृत्व में प्रशिक्षित टीम व आधुनिक जीवन रक्षा उपकरण उपलब्ध कराये जाने से एसडीआरएफ तमाम चुनौतियों का मुकाबला करने में सक्षम हो सकेगी। निश्चित रूप से अग्निवीरों की सेना में कुशल ट्रेनिंग, अनुशासन के साथ चुनौतियों का मुकाबला करने का प्रशिक्षण व फील्ड में हासिल अनुभव स्टेट डिजास्टर रिस्पॉन्स फोर्स को प्रभावी बनाएगा। जिसके आधार पर ही सरकार ने उन्हें एसडीआरएफ बटालियन में प्राथमिकता देने का निर्णय लिया है।

निश्चित तौर पर इससे राज्य में आपदा में तुरंत प्रतिक्रिया क्षमता को संबल मिलेगा। साथ ही अग्निवीरों को अपनी क्षमता प्रदर्शन का नया मंच मिलने से, युवा सेना की अग्निवीर योजना को कैरियर के विकल्प के रूप में चुन सकेंगे।

कब थमेगी फूलों की घाटी की आग

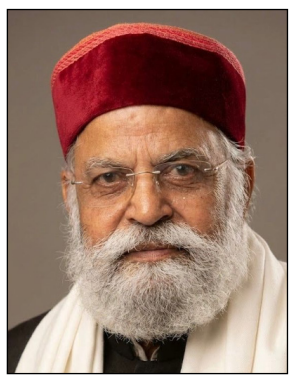

ज्ञानेन्द्र रावत

● जंगलों में दूर से ही धुंए का गुब्बार और आग की लपटें दिखाई दे रही हैं। अब तो यह आग नंदा देवी पार्क के नीचे के इलाके में हरे पेड़ों तक पहुंच गयी है। जबकि प्रशासन यह दावा कर रहा है कि उसने फूलों की घाटी क्षेत्र के गोविंद गढ़ रेंज में, बद्रीनाथ की निजमुला घाटी व गौणा गांव के जंगलों में लगी आग पर आंशिक रूप में सफलता पायी है। लेकिन अभी भी आग से 15 हैक्टेयर से ज्यादा इलाका आग से धधक रहा है। हकीकत यह है कि नीचे की ओर लगी आग बुझाने में तो वनकर्मी जुटे हुए हैं लेकिन इतने दिनों बाद भी इस दुर्गम इलाके में खड़ी चट्टानों पर लगी आग पर काबू पाने में प्रशासन खुद को असमर्थ पा रहा है।

देश-दुनिया में मशहूर, यूनेस्को द्वारा घोषित विश्व धरोहर, धरती का स्वर्ग, बायोस्फीयर रिजर्व, सर्वाधिक संवेदनशील इलाका, हिम तेंदुआ और हिमालयी भालू और ब्रह्मकमल आदि जैसी असंख्य दुर्लभ प्रजातियों के लिए विख्यात उत्तराखंड राज्य की शान, चमोली जिले में नंदा देवी राष्ट्रीय उद्यान के बफर जोन के अंतर्गत आने वाली फूलों की घाटी, जहां हर साल हजारों पर्यटक कुदरत की खूबसूरती देखने आते हैं, बीती नौ जनवरी से लगी आग से लगातार धधक रही है। यहां सबसे पहले पेनावडी और भ्यूंडार रेंज की पहाड़ियों पर आग लगी थी। सबसे बड़ी बात यह कि अलकनंदा और लक्ष्मण गंगा नदियों के बीच स्थित 13 हजार फीट की ऊंची चट्टानों, पेड़ व पत्थर गिरने और जलते पेड़ों के बीच राहत व वनकर्मियों के लिए आग बुझाने के लिए पहुंचना बेहद मुश्किल भरा साबित हो रहा है। यहां न सड़क है और न पैदल रास्ता। यही वह अहम वजह है जिसके चलते एस डी आर एफ पी भी मौके पर नहीं पहुंच पा रही है। इसमें अति आधुनिक उपकरणों व संसाधनों का अभाव भी राहत कर्मियों के लिए सबसे बड़ी बाधा बन रहा है। फिर बड़ी तादाद में मौजूद यहां सूखी झाड़ियां, सूखी पत्तियां, सूखे पेड़ और लकड़ियां भी आग फैलने में अहम भूमिका निबाह रही हैं। जंगलों में दूर से ही धुंए का गुब्बार और आग की लपटें दिखाई दे रही हैं। अब तो यह आग नंदा देवी पार्क के नीचे के इलाके में हरे पेड़ों तक पहुंच गयी है। जबकि प्रशासन यह दावा कर रहा है कि उसने फूलों की घाटी क्षेत्र के गोविंद गढ़ रेंज में, बद्रीनाथ की निजमुला घाटी व गौणा गांव के जंगलों में लगी आग पर आंशिक रूप में सफलता पायी है। लेकिन अभी भी आग से 15 हैक्टेयर से ज्यादा इलाका आग से धधक रहा है। हकीकत यह है कि नीचे की ओर लगी आग बुझाने में तो वनकर्मी जुटे हुए हैं लेकिन इतने दिनों बाद भी इस दुर्गम इलाके में खड़ी चट्टानों पर लगी आग पर काबू पाने में प्रशासन खुद को असमर्थ पा रहा है। चिंता की मुख्य वजह यह भी है कि फायर सीजन से पहले ही इस बार सर्दियों के मौसम में उत्तराखंड जो देवभूमि के नाम से विख्यात है, में जंगल धधक रहे हैं। यही नहीं नमी,ठंड और शांत पहाड़ इस आग से तप रहे हैं। जबकि अभी न बारिश है और न ही बर्फबारी हुयी है। अभी यह हालत है तो गर्मी के सीजन अप्रैल- मई में जब तापमान 35-40 से ऊपर पहुंचेगा, तब क्या होगा ? यह हालत उत्तराखंड में किसी क्षेत्र विशेष की नहीं है, इससे गढ़वाल और कुमाऊं अंचल भी अछूता नहीं रहा है। हकीकत यह है कि उत्तरकाशी में वरणावत के पहाड़ी क्षेत्र, दशोली के निजमुला घाटी , पेनखंडा, पुलना, म्यूंडार,पौढी के जामणाखाल, लाता, मैंग्यूल, सल्ला कम्यार और कुमांयू के अल्मोड़ा में हवालवडा,नहला और पाटलीबगड के जंगल आज भी कई दिनों से धधक रहे हैं, उनपर भी अभी तक अंकुश नहीं लग सका है। दुखदायी बात यह कि हवा के साथ आग और फैल रही है। जबकि मौसम

विभाग की मानें तो अगले 10 दिनों तक बारिश की कोई संभावना नहीं है। यह हालात की गंभीरता का सबूत है। वह बात दीगर है कि राहत कार्य में मदद के लिए वायु सेना के एम आई 16 हेलीकॉप्टर बांबी बकेट आपरेशन के लिए जोशीमठ में तैनात हैं। लेकिन उनका उपयोग प्रशासन हवाई सर्वे और आग की तीव्रता व भयावहता के आकलन के अलावा आपदा प्रबंधन के बीच समन्वय के बाद ही कर सकेगा। विडम्बना यह कि अभी भी वायु सेना और वन विभाग बांबी बकेट आपरेशन के मुद्दे पर सोशल मीडिया में वायरल एक वीडियो के मामले में बहस में उलझे हुए हैं। वायु सेना के एक वीडियो के मामले में डी एफ ओ चेतना कांडपाल ने साफ किया है कि अभी तक वायु सेना के हेलीकॉप्टर से आग बुझाने के नाम पर एक बूंद पानी डाला नहीं गया है।वहीं वायु सेना आग बुझाने में टिहरी-श्रीनगर डैम से पानी लाने में दिक्कत, पानी के स्रोत पास में नहीं होने और लॉजिस्टिक्स बेहद मुश्किल होने की बात कर रही है। वन विभाग ड्रोन व स्थानीय माध्यमों से आग की स्थिति पर नजर रखने के दावे करने में कीर्तिमान बना रहा है। विचारणीय यह है कि वन विभाग के पास आगजनी से हुए नुकसान की अभी तक कोई जानकारी नहीं है, वह केवल इतना ही कह रहा है कि जंगल की आग में सूखे पेड़ों के गिरने की वजह से बढोतरी हुयी है। वह यह बताने में आज भी नाकाम रहा है कि आग कैसे लगी,किसने लगायी,असामाजिक तत्वों का तो इसमें हाथ नहीं है या फिर शार्टसर्किट से लगी या फिर चरवाहों ने लगायी। जैसा कि अक्सर आरोप लगाया जाता है। असलियत यह है कि जंगल की आग में बढोतरी में वन विभाग की लापरवाही की अहम भूमिका है । यदि वह समय रहते सक्रिय हुआ होता तो इतना नुकसान नहीं होता। वह तो इसी इंतजार में रहा कि यह आग जब चोटी तक पहुंचेगी तब अपने आप बुझ जायेगी। गौरतलब है कि इस आग में पर्यावरण का ही विनाश नहीं हुआ है,करोड़ों की लकड़ी ही नहीं जली है, लाखों-करोड़ों औषधीय पेड़-पौधे, पक्षी, वनस्पति, वन्य-जीवों के आवास, पारिस्थितिकीय तंत्र स्वाहा हुआ है। डी एफ ओ चेतना कांडपाल भी इसे स्वीकारती हैं। अब अहम सवाल यह है कि इस आग के लिए कौन जिम्मेदार है। क्या हर साल की तरह इस आग का मुद्दा भी फाइलों में दफन हो जायेगा। और यह कि क्या हमने आग बुझाने की तैयारी समय रहते की थी या अब की है। अगर नहीं तो क्यों नहीं। जबकि पहाड़ों पर आग लगने की घटनायें तो हर साल होती हैं। क्या हमने उनसे कोई सबक सीखा है। उन घटनाओं से सरकार कितनी सजग हुयी है। सरकार पर्यावरण संरक्षण की बात तो करती है लेकिन क्या वह हकीकत में पर्यावरण संरक्षण के प्रति गंभीर है। देश के मौजूदा हालात तो इसकी गवाही कतई नहीं देते। इस सवाल पर सरकार का मौन समझ से परे है। सरकार यह क्यों नहीं सोचती कि पहाड़ नहीं रहेंगे, वन संपदा इसी तरह आग की समिधा बनती रहेगी, तो ग्लेशियर खत्म हो जायेंगे, उस दशा में नदियां सूख जायेंगीं, जलस्रोत सूख जायेंग और हम पानी की एक-एक बूंद के लिए तरसेंगे। तब क्या होगा? इस बारे में आमजन को भी सोचना होगा कि पहाड़ रहेंगे, वनस्पति रहेगी, हरियाली रहेगी तो पर्यावरण सुरक्षित रहेगा। पर्यावरण सुरक्षित रहेगा तो हमारा जीवन सुरक्षित रहेगा। जिस तरह जलवायु परिवर्तन हमें चेतावनी दे रहा है, उसे देखते हुए हमें भी सावधानी बरतनी होगी। प्रकृति से खिलवाड़ बंद करना होगा, उससे सामंजस्य बनाना होगा। जंगल बचाने की जिम्मेवारी हम सबकी है। अरावली प्रकरण एक चेतावनी है कि अब भी समय है संभल जाओ। यदि देवभूमि उत्तराखंड के जंगल इसी तरह जलते रहे तो एक दिन देवभूमि का अस्तित्व ही खतरे में पड़ जायेगा। आपदाओं ने हमें समय-समय पर चेताया है लेकिन यदि अब भी हम नहीं संभले तो बहुत देर हो जायेगी और तब हाथ मलते रहने के सिवाय हमारे पास कुछ नहीं होगा।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार एवं पर्यावरणविद हैं।)

Like, Share, Followers और Subscribers में फँसा आज का व्यक्ति, एक सामाजिक दृष्टिकोण

डॉ. हेमलता शर्मा

● परिणामस्वरूप व्यक्ति अपने जीवन की निजी अनुभूतियों को भी सार्वजनिक मंच पर प्रस्तुत करने लगा है। मानो आत्मसंतोष की जगह बाहरी स्वीकृति ने ले ली हो। यह प्रवृत्ति व्यक्ति को धीरे-धीरे आत्मकेंद्रित और असुरक्षित बनाती है।

डिजिटल क्रांति ने मानव जीवन को सरल, तीव्र और वैश्विक बना दिया है। संचार के साधन सुलभ हुए हैं, विचारों की अभिव्यक्ति को नया मंच मिला है और समाज एक-दूसरे से जुड़ा है। किंतु इसी प्रगति के साथ Like, Share, Followers और Subscribers जैसे शब्द आज के व्यक्ति और समाज के लिए सफलता, सम्मान और स्वीकार्यता के नए मानदंड बनते जा रहे हैं। यह स्थिति केवल तकनीकी नहीं, बल्कि सामाजिक और मानसिक परिवर्तन का संकेत है।

आज के व्यक्ति की मानसिकता

आज का व्यक्ति अपने आचरण, श्रम और विचारों से अधिक डिजिटल प्रतिक्रिया पर निर्भर हो गया है। किसी कार्य की सार्थकता इस बात से आँकी जाती है कि वह कितने लाइक बटोर सका या कितनी बार शेयर हुआ। परिणामस्वरूप व्यक्ति अपने जीवन की निजी अनुभूतियों को भी सार्वजनिक मंच पर प्रस्तुत करने लगा है। मानो आत्मसंतोष की जगह बाहरी स्वीकृति ने ले ली हो। यह प्रवृत्ति व्यक्ति को धीरे-धीरे आत्मकेंद्रित और असुरक्षित बनाती है।

समाज का बदलता दृष्टिकोण

समाज भी इस परिवर्तन से अछूता नहीं है। आज किसी व्यक्ति की विश्वसनीयता उसके ज्ञान या चरित्र से नहीं, बल्कि उसके Followers और Subscribers की संख्या से तय की जाती है। भीड़ का समर्थन सत्य का पर्याय बनता जा रहा है। इस कारण समाज में विवेकशील सोच के स्थान पर अंधानुकरण की प्रवृत्ति बढ़ रही है। जो लोकप्रिय है, वही सही माना जाने लगा है।

रिश्तों और संवेदनाओं पर प्रभाव

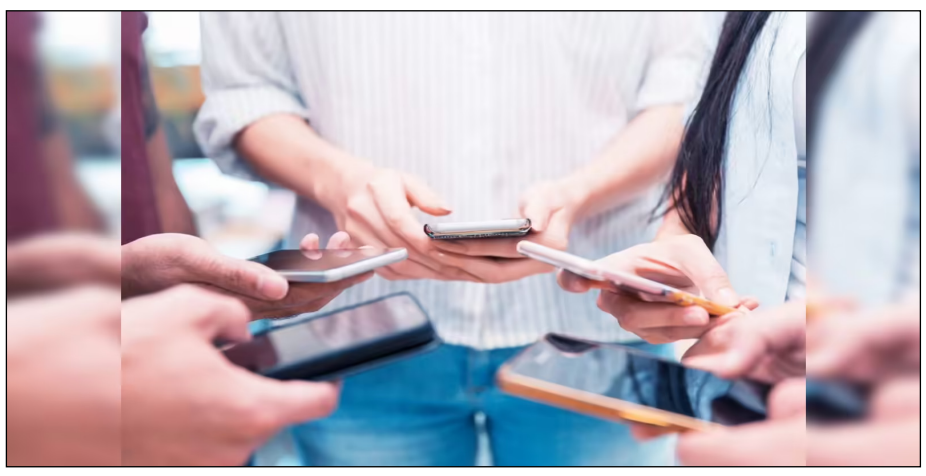

डिजिटल प्रदर्शन ने मानवीय रिश्तों को भी प्रभावित किया है। संवेदना अब साथ बैठकर दुख बाँटने में नहीं, बल्कि एक पोस्ट शेयर करने या कमेंट लिख देने में सीमित हो गई है। रिश्तों की गहराई कम हो रही है और औपचारिकता बढ़ रही है। यह स्थिति समाज को भीतर से खोखला बना सकती है।

सकारात्मक पक्ष और सीमाएँ

यह भी सत्य है कि सोशल मीडिया ने प्रतिभाओं को पहचान दी है, सामाजिक मुद्दों को आवाज़ दी है और जन-जागरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। किंतु जब इसका उपयोग संतुलन खो देता है, तब यह साधन साध्य पर हावी हो जाता है। समस्या तकनीक में नहीं, बल्कि उसके अति प्रयोग में है।

निष्कर्ष

Like, Share, Followers और Subscribers आज के समय की वास्तविकता हैं, पर इन्हें जीवन का अंतिम लक्ष्य बना लेना चिंताजनक है। समाज को आवश्यकता है ऐसे व्यक्तियों की जो Follow करने से पहले सोचें, Share करने से पहले समझें और Popular होने से पहले जिम्मेदार बनें। क्योंकि समाज केवल डिजिटल भीड़ से नहीं, बल्कि संवेदनशील और विवेकशील मनुष्यों से जीवित रहता है।

बंगाल में लोकतंत्र, विकास और अस्मिता की निर्णायक परीक्षा-घड़ी

ललित गर्ग

पश्चिम बंगाल की राजनीति इस समय एक ऐसे संक्रमण काल से गुजर रही है, जहां सत्ता, संघर्ष, कानून और जनभावना-चारों धाराएं एक-दूसरे से टकराती हुई दिखाई देती हैं। यह टकराव केवल भाजपा और तृणमूल कांग्रेस के बीच राजनीतिक वर्चस्व की लड़ाई भर नहीं है, बल्कि यह उस शासन शैली, लोकतांत्रिक मर्यादा और विकास दृष्टि की भी परीक्षा है, जिसके आधार पर बंगाल अपनी आने वाली राजनीतिक दिशा तय करेगा। लंबे समय तक 'खेला होगा' के नारे के सहारे भाजपा को रोकने में सफल रहीं मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के सामने इस बार परिस्थितियां अपेक्षाकृत अधिक जटिल, चुनौतीपूर्ण और बहुआयामी नजर आ रही हैं। आज समूचे देश की नजरे पश्चिम बंगाल पर टिकी है। वहां आगामी विधानसभा काफी रोमांचक एवं निर्णायक होगा, जिसमें पश्चिम बंगाल का नया भविष्य बुनने की दिशाएं उद्घाटित होगी। एक ओर केंद्र और राज्य के बीच टकराव अपने चरम पर है, तो दूसरी ओर केंद्रीय एजेंसियों की कार्रवाई, अदालती टिप्पणियां और कानूनी बहसें राजनीतिक विमर्श को नियंत्रित कर रही हैं। सुप्रीम कोर्ट की हालिया टिप्पणियों ने केवल एक कानूनी प्रश्न ही नहीं उठाया, बल्कि यह संकेत भी दिया कि राज्य सरकारों द्वारा केंद्रीय जांच एजेंसियों के कामकाज में हस्तक्षेप की सीमाएं कहां तक हो सकती हैं। इस पूरे घटनाक्रम ने ममता बनर्जी की उस राजनीतिक छवि को आंशिक रूप से प्रभावित किया है, जो अब तक स्वयं को केंद्र के कथित दमन के विरुद्ध संघीय ढांचे की रक्षक के रूप में प्रस्तुत करती रही हैं। अदालतों में लंबी चलने वाली कानूनी लड़ाइयों का राजनीतिक प्रभाव तुरंत और गहरा होता है, विशेषकर तब, जब चुनाव नजदीक हों और जनता का ध्यान प्रशासनिक उपलब्धियों से हटकर आरोप-प्रत्यारोप पर केंद्रित होने लगे। बंगाल की राजनीति की एक विशिष्ट विशेषता यह रही है कि यहां विचारधारा और भावनाएं अत्यंत तीव्र रूप से अभिव्यक्त होती हैं। वाम मोर्चे के लंबे शासन के बाद ममता बनर्जी का उदय एक जनांदोलन के रूप में हुआ था। उन्होंने न केवल वामपंथी वर्चस्व को तोड़ा, बल्कि खुद को गरीब, हाशिए के वर्ग और क्षेत्रीय अस्मिता की आवाज के रूप में स्थापित किया। शुरुआती वर्षों में उनकी सरकार ने कुछ कल्याणकारी योजनाओं और सशक्त राजनीतिक संप्रेषण के माध्यम से जनता का विश्वास भी अर्जित किया। किंतु समय के साथ सत्ता का केंद्रीकरण, संगठन पर अत्यधिक नियंत्रण और विरोध के प्रति असहिष्णुता जैसे आरोप भी समानांतर रूप से उभरते गए। भाजपा ने इन्हीं कमजोरियों को अपना राजनीतिक आधार बनाने की कोशिश की है। 2019 के लोकसभा चुनावों से लेकर अब तक भाजपा ने बंगाल में अपने संगठनात्मक ढांचे को मजबूत किया है और हिंदुत्व, राष्ट्रवाद तथा भ्रष्टाचार विरोधी विमर्श को आक्रामक रूप से आगे बढ़ाया है। हालांकि विधानसभा चुनाव में तृणमूल कांग्रेस ने भारी बहुमत से वापसी की, लेकिन यह भी सच है कि भाजपा बंगाल की राजनीति में एक स्थायी और निर्णायक शक्ति के रूप में स्थापित हो चुकी है। मत प्रतिशत में अंतर और सीटों का आंकड़ा भाजपा के लिए भले ही निराशाजनक रहा हो, पर संगठनात्मक विस्तार और सामाजिक आधार का विस्तार उसके लिए भविष्य की संभावनाओं के द्वार खोलता है। हाल के वर्षों में बंगाल में विकास का प्रश्न अपेक्षाकृत पीछे छूटता दिखाई दिया है। उद्योग, निवेश और रोजगार के मुद्दे राजनीतिक शोर में दब गए हैं। आम जनता की एक बड़ी चिंता यह भी है कि राज्य की राजनीति निरंतर टकराव और हिंसा के आरोपों से क्यों घिरी रहती है। चुनावी हिंसा, राजनीतिक कार्यकर्ताओं पर हमले और प्रशासन की निष्पक्षता पर उठते सवाल राज्य की छवि को नुकसान पहुंचाते हैं। पड़ोसी देशों से अवैध घुसपैठ, सीमावर्ती इलाकों में जनसांख्यिकीय बदलाव और कानून-व्यवस्था की चुनौतियां भी राजनीतिक विमर्श का

हिस्सा बन चुकी हैं। इन मुद्दों पर ममता सरकार का रुख अक्सर रक्षात्मक दिखाई देता है, जबकि भाजपा इन्हें राष्ट्रीय सुरक्षा और सांस्कृतिक पहचान से जोड़कर व्यापक समर्थन जुटाने का प्रयास करती है। महाराष्ट्र के शहरी निकाय चुनावों और बिहार में भाजपा को मिली हालिया सफलता ने पार्टी के आत्मविश्वास को निश्चित रूप से बढ़ाया है। भाजपा का यह विश्वास कि बंगाल अब भी राजनीतिक परिवर्तन के लिए तैयार है, केवल चुनावी आंकड़ों पर आधारित नहीं है, बल्कि वह इसे एक लंबी रणनीति का हिस्सा मानती है। किंतु बंगाल कोई साधारण राजनीतिक मैदान नहीं है। यहां की सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक चेतना और ऐतिहासिक स्मृति किसी भी दल के लिए आसान नहीं रही है। ममता बनर्जी की सबसे बड़ी ताकत आज भी उनकी जमीनी पकड़ और भावनात्मक अपील है, जो उन्हें भाजपा के केंद्रीय नेतृत्व से अलग, एक क्षेत्रीय और स्थानीय नेता के रूप में स्थापित करती है। आने वाले विधानसभा चुनाव वास्तव में इस बात की कसौटी होंगे कि जनता विकास, स्थिरता और कानून-व्यवस्था को प्राथमिकता देती है या फिर भावनात्मक और पहचान आधारित राजनीति को? क्या ममता बनर्जी लगातार चौथी बार सत्ता में लौटकर यह सिद्ध कर पाएंगी कि केंद्र से टकराव ही उनकी सबसे बड़ी राजनीतिक पूंजी है, या भाजपा जनता को यह विश्वास दिलाने में सफल होगी कि परिवर्तन ही स्थायित्व और विकास का रास्ता है, यह प्रश्न अभी खुला हुआ है। अदालती प्रक्रियाएं, राजनीतिक बयानबाजी और चुनावी रणनीतियां अपनी जगह हैं, लेकिन अंतिम निर्णय बंगाल की जनता के हाथ में है। पश्चिम बंगाल की राजनीति आज संकीर्णता और सांप्रदायिक ध्रुवीकरण के ऐसे दौर से गुजर रही है, जिसने विकास की गति को गंभीर रूप से अवरुद्ध किया है। कभी देश की आर्थिक, औद्योगिक और बौद्धिक राजधानी कहलाने वाला बंगाल-विशेषकर कोलकाता, आज निवेश, उद्योग और रोजगार के मोर्चे पर पिछड़ता हुआ दिखाई देता है। ममता बनर्जी के लंबे शासनकाल में औद्योगिक विश्वास का क्षरण, पूंजी पलायन, बंद होती इकाइयाँ और युवाओं का अन्य राज्यों की ओर पलायन इस गिरावट के स्पष्ट संकेत हैं। लोकतांत्रिक संस्थाओं की स्वायत्तता पर उठते प्रश्न, विपक्षी आवाज़ों का दमन और चुनावी हिंसा की घटनाएँ राज्य के लोकतांत्रिक स्वास्थ्य पर गहरी चोट करती हैं। इसके साथ ही, राज्य में सामाजिक ताने-बाने को लेकर बढ़ती आशंकाएँ भी कम चिंताजनक नहीं हैं। अनेक क्षेत्रों में कानून-व्यवस्था, धार्मिक स्वतंत्रता और अल्पसंख्यक-बहुसंख्यक संबंधों को लेकर शिकायतें सामने आती रही हैं; विशेषकर हिंदू समाज के एक हिस्से में असुरक्षा की भावना ने जनमन को आहत किया है। इन घटनाओं और धारणाओं ने जनता के भरोसे को कमजोर किया है और शासन के प्रति निराशा को बढ़ाया है। राजनीति जब पहचान और विभाजन के इर्द-गिर्द सिमटती है, तो विकास, समावेशन और सामाजिक सौहार्द पीछे छूट जाते हैं, यही आज के बंगाल की त्रासदी बनती दिख रही है। ऐसे समय में बंगाल की जनता के लिए अपने लोकतांत्रिक अधिकारों के प्रति सजग होना अनिवार्य है। यह राज्य केवल भौगोलिक इकाई नहीं, बल्कि उसकी अस्मिता उसकी बौद्धिक परंपरा, भावनात्मक संवेदनशीलता, धार्मिक सहअस्तित्व, आध्यात्मिक खोज और समृद्ध साहित्यिक विरासत से निर्मित है-रवींद्रनाथ से विवेकानंद तक की धरोहर इसे दिशा देती रही है। दंगों, हिंसा और भय के साए में इस अस्मिता पर जो दाग लगे हैं, उन्हें मिटाने का मार्ग शांतिपूर्ण, जागरूक और निर्भीक लोकतांत्रिक सहभागिता से ही निकलेगा। आगामी चुनाव जनता के लिए आत्ममंथन और आत्मनिर्णय का अवसर हैं-जहाँ मत केवल सत्ता नहीं, बल्कि बंगाल के भविष्य, उसकी संस्कृति और उसके लोकतांत्रिक आत्मसम्मान की रक्षा का माध्यम बनना चाहिए। बंगाल की बनती नई तस्वीर अभी पूरी तरह स्पष्ट नहीं है। यह तस्वीर संघर्ष और संभावनाओं, आशंकाओं और उम्मीदों से बनी है। एक ओर सत्ता का अनुभव और जनाधार है, तो दूसरी ओर आक्रामक विपक्ष और राष्ट्रीय राजनीति की ताकत। लोकतंत्र की यही खूबी है कि वह अंतिम शब्द जनता को देता है। बंगाल के मतदाता ही तय करेंगे कि शह-मात की इस राजनीति में अगली चाल किसकी होगी और कौन-सा पक्ष अंततः बाजी मारेगा।

मालिक, प्रकाशक, मुद्रक दीपक कुमार शर्मा द्वारा जॉय प्रिंटर्स प्लॉट नं 3जी -142, एनआईटी फरीदाबाद से मुद्रित एवं 903 सैक्टर-8, फरीदाबाद 121006 (हरियाणा) से प्रकाशित।
संपादक- दीपक कुमार शर्मा
RNI No. HARBIL/2016/74676
Mob. 8527791656, 9899222656,

अग्रवाल कॉलेज में उद्योग जागरूकता पर विशेषज्ञ व्याख्यान

अतुल्य लोकतंत्र/संवाददाता

बल्लभगढ़। जनवरी, 2026 को वाणिज्य विभाग ने बी.कॉम द्वितीय वर्ष और बी.सी.एद्वितीय वर्ष के छात्रों के लिए 'उद्योग जागरूकता' विषय पर एक विशेषज्ञ व्याख्यान का आयोजन किया। अग्रवाल कॉलेज बल्लभगढ़ में अध्यक्ष देवेंद्र कुमार गुप्ता, महासचिव अधिवक्ता दिनेश कुमार गुप्ता और कार्यवाहक प्रधानाचार्य डॉ. संजीव कुमार गुप्ता के कुशल मार्गदर्शन में ऐसे कार्यक्रम नियमित रूप से आयोजित किए जाते हैं। कार्यक्रम का समन्वय प्रभारी (विंग 1) डॉ. सचिन गर्ग के प्रभावी नेतृत्व में किया गया। वाणिज्य विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. सीमा मलिक, कंप्यूटर विज्ञान विभाग की विभागाध्यक्ष मोहिनी वर्मा और समन्वयक अनीता और नताशा ने इस उपयोगी व्याख्यान के आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। विक्षित भारत फाउंडेशन के प्लेसमेंट मैनेजर मोहम्मद सफदर अहसान और विक्षित भारत फाउंडेशन की प्रोजेक्ट मैनेजर मोनिका गर्ग इस व्याख्यान के विशेषज्ञ थे। सत्र की शुरुआत में डॉ. सीमा मलिक ने स्वागत भाषण दिया और उन्हें पुष्पांजलि भेंट की। सुश्री मोनिका ने शैक्षणिक पाठ्यक्रम के साथ-साथ उद्योग के महत्व के बारे मेंछात्रों की समझ को बढ़ाने के लिए एक रोडमैप तैयार किया। उन्होंने आज के प्रतिस्पर्धी औद्योगिक वातावरण में नवीनतम विकास, चुनौतियों और अवसरों पर प्रकाश डाला। यह सत्र बेहद संवादात्मक रहा, जिसमें छात्रों ने प्रश्नोत्तर सत्र में सक्रिय रूपसे भाग लिया।

सुंदरकांड का पाठ करने से दूर हो जाते हैं सभी तरह के भय: राजेश नागर

• रामलला के प्राण प्रतिष्ठा दिवस की द्वितीय वर्षगांठ पर सुन्दरकांड पाठ का आयोजन

अतुल्य लोकतंत्र/दीपक शर्मा

फरीदाबाद। अयोध्या में भव्य राम मंदिर में विराजमान रामलला के प्राण प्रतिष्ठा दिवस की द्वितीय वर्षगांठ के उपलक्ष्य में हुडडा ग्राउन्ड सेक्टर-37 निकट सामुदायिक भवन में भारत विकास परिषद नारायण शाखा फरीदाबाद के तत्वाधान में सुंदरकांड पाठ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर हरियाणा सरकार में राज्यमंत्री राजेश नागर,महापौर श्रीमति प्रवीण बतरा जोशी, पूर्व मंत्री श्रीमति सीमा त्रिखा, पूर्व भाजपा जिलाध्यक्ष राजकुमार वोहरा, मनमोहन गुप्ता, बिजैन्द्र बंसल, एसएचओ राकेश मलिक, अजय गुरूजी, जयप्रकाश अग्रवाल, आईडी शर्मा, मुकेश अग्रवाल, लोकेश शर्मा, संजय अग्रवाल, मुकेश अग्रवाल, आशा शर्मा, संजीव कंसल, अनिता शर्मा, श्याम सुन्दर, नंदा भड़ाना, लोकेश बैंसला, योगेंन्द्र भाटी, बह्मप्रकाश गोयल, बुद्धप्रकाश तायल, मदल लाल जिन्दल मुख्य

रूप से मौजूद थे। इस मौके पर भारी संख्या में पहुंचे श्रृद्धालुओं ने पहले जय श्रीराम का जयघोष किया और फिर सुन्दरकांड पाठ को सुना। कार्यक्रम का आयोजन रामभक्त देवेन्द्र अग्रवाल(देबू) द्वारा किया गया। इस मौके पर राजेश नागर ने कहा कि हर मंगलवार को सुंदरकांड का पाठ करने से दूर हो जाते हैं सभी तरह के भय। सुंदरकांड श्री राम चरित मानस का 5 वा अध्याय/कांड है। जहाँ सम्पूर्ण रामायण में श्री राम के सूंदर स्वरुप, उनके जीवन काल, स्वभाव, आदर्शों का गुण गान किया गया है वहीं सुन्दरकांड एक ऐसा भाग है जो सिर्फ हनुमान जी की वीरता का बखान करता है। सुन्दरकाण्ड के पाठ से सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं हनुमानजी नें अपनी बुद्धि और बल से सीता की खोज की है। इसी वजह से सुंदरकांड को हनुमानजी की सफलता के लिए याद किया जाता है। इस अवसर पर प्रवीण बतरा जोशी, पूर्व मंत्री सीमा त्रिखा, रामभक्त देवेन्द्र अग्रवाल(देबू) ने कहा कि यदि किसी व्यक्ति के जीवन में अत्यधिक परेशानियां हो तथा कोई काम नहीं बन पा रहा है, आत्मविश्वास की कमी हो तो सुंदरकांड के पाठ से शुभ फल प्राप्त होता है। यह भक्तिमय आयोजन भगवान श्री राम की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक महिमा का उत्सव मनाने के लिए समर्पित है। आज के इस आयोजन में प्रभु श्री रामलला की महिमा में भजनों, रागों और कीर्तन की भावपूर्ण प्रस्तुति दी गई जिससे वातावरण दिव्य आनंद और भक्ति से भर गया। पाठ के समापन पर विशाल भण्डारे में भक्तों ने प्रसाद ग्रहण किया।

स्वास्थ्य जागरूकता की दिशा में आयुष विभाग का प्रयास, स्कूल में योग सत्र आयोजित

अतुल्य लोकतंत्र/संवाददाता

फरीदाबाद। आयुष विभाग, फरीदाबाद द्वारा नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों की श्रृंखला के अंतर्गत आज ओम शिक्षा संस्कार सीनियर सेकेंडरी स्कूल, पाली (फरीदाबाद) में सूर्य नमस्कार एवं योग सत्र का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में योगीराज ओमप्रकाश महाराज ने विद्यार्थियों को नेताजी सुभाष चंद्र बोस के प्रेरणादायक जीवन, उनके आदर्शों एवं पदचिन्हों पर चलने की आवश्यकता के बारे में विस्तार से जानकारी दी। इस अवसर पर उन्होंने स्वयं सूर्य नमस्कार कर विद्यार्थियों को उसका अभ्यास करवाया और योग के महत्व को व्यवहारिक रूप से समझाया। आयुष विभाग के जिला योग विशेषज्ञ विकास यादव ने

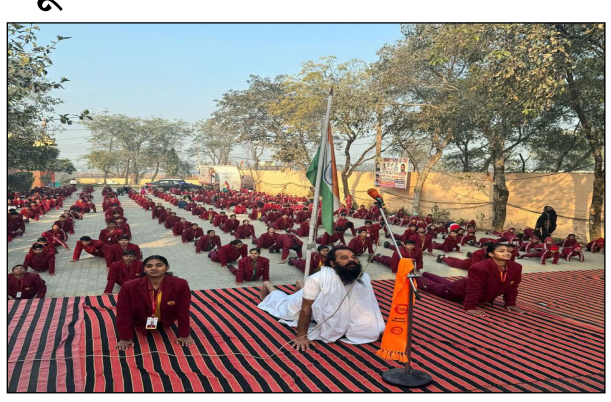

विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को सूर्य नमस्कार के महत्व, उसकी सही विधि तथा नियमित अभ्यास से होने वाले शारीरिक एवं मानसिक लाभों की जानकारी दी। कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए सामूहिक रूप से सूर्य नमस्कार का अभ्यास किया। विद्यालय प्रबंधन एवं स्टाफ ने आयुष विभाग की इस पहल की सराहना करते हुए इसे विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए अत्यंत लाभकारी बताया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाना तथा योग को दैनिक जीवन का अभिन्न अंग बनाना रहा। कार्यक्रम के सफल आयोजन में योग सहायक साहिल का सराहनीय सहयोग रहा।

बाबा खाटू श्याम के साथ नगर परिक्रमा को मंत्री राजेश नागर ने किया रवाना

▸▸ गांव भूआपुर स्थित श्री खाटू श्याम मंदिर में खाटू मंदिर से हेलीकॉप्टर से लाई ज्योति हुई स्थापित

अतुल्य लोकतंत्र/दीपक शर्मा

फरीदाबाद। आज गांव भुआपुर में खाटू श्याम सेवा समिति द्वारा श्री खाटू श्याम दरबार से लाई ज्योति के साथ भगवान श्री खाटू श्याम जी की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा की गई। खास बात है कि मंदिर में स्थापित की गई ज्योति श्री खाटू श्याम मंदिर से हेलीकॉप्टर के माध्यम से लाई गई जो सभी के आकर्षण का केंद्र बन गई। इस भव्य कार्यक्रम के आयोजक पूर्व जिला पार्षद प्रत्याशी कृष्ण नागर थे। उससे पहले आसपास के समस्त गांवों में प्रभात फेरी के माध्यम से भक्तों के दर्शनार्थ

यात्रा निकाली गई। यात्रा को झंडी देने के बाद मंत्री राजेश नागर ने कहा कि आज हम सबका सौभाग्य है कि सेठों के सेठ भगवान श्री खाटू श्याम जी यहां मंदिर में विराजे हैं। इस अवसर पर उपस्थित सभी जन बधाई के पात्र हैं। मुझे भी इस अवसर पर उपस्थित होकर बड़ी खुशी हो रही है। मेरी प्रार्थना है कि भगवान श्री खाटू श्याम हमारे क्षेत्र में धन धान्य की भरमार करें। सभी लोग स्वस्थ एवं दीर्घायु रहें। मंत्री राजेश नागर ने बताया कि हरियाणा की सरकार पहले से तीर्थ यात्राओं को लेकर सजग है और हम सभी ने देखा है कि प्रयागराज महाकुंभ के लिए किस प्रकार से विशेष निशुल्क यात्राओं का आयोजन नायब सरकार ने किया था। वहीं अब हिसार और गुरुग्राम से श्री खाटू श्याम और श्री सालासर धाम के लिए हेलीकॉप्टर की योजना भी सरकार का बड़ा प्रोजेक्ट है जिसका लाभ सभी को मिलेगा। इस अवसर पर महंत गिरधर गिरी महाराज के सान्निध्य में खाटू नरेश की प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा से पूर्व एक नगर फेरि निकाली गई जो गांव भुआपुर से प्रारंभ होकर गांव फत्तूपुरा, गांव शाहाबाद, गांव ताजूपुर, गांव ढहकोला, गांव भैंसरावली होते हुए वाया तिगांव होते हुए वापस भुआपुर पर संपन्न हुई। इस अवसर पर हजारों की संख्या में स्थानीय लोगों ने भागीदारी की जिनमें सरपंच वेद प्रकाश नागर, सरपंच विक्रम प्रताप नागर, सरपंच वेद अधाना, राजेश्वर भाटी चेयरमैन, बाबू समरवीर नागर, डॉ कर्मवीर नागर, सीए संदीप नागर, हेमंत शर्मा, अमन नागर, कमल नागर, अजब सिंह नागर, चंदर कौशिक, जयवीर खटाना, अजब सिंह चंदिला, धर्म सिंह सरपंच, आर एस गांधी आदि प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

'बूथ मजबूत होगा तो संगठन मजबूत होगा, कार्यकर्ता करें बूथ को मज़बूत': पंकज पूजन रामपाल

▸▸ पंकज रामपाल ने मंडल अध्यक्षों के एक साल के सफल कार्यकाल पर बधाई एवं शुभकामनाएँ दी

अतुल्य लोकतंत्र/दीपक शर्मा

फरीदाबाद। भारतीय जनता पार्टी फ़रीदाबाद के जिला अध्यक्ष पंकज पूजन रामपाल ने कहा कि हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी एवं देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा चलाई जा रही कल्याणकारी व जनहितकारी योजनाएं प्रदेश के जन-जन को आत्मनिर्भर एवं सशक्त बना रही हैं। यही सुशासन का वास्तविक स्वरूप है। इन योजनाओं को बूथ स्तर पर संवाद, सेवा और संपर्क के माध्यम से आम जनता तक पहुँचाना प्रत्येक कार्यकर्ता का दायित्व है। भारतीय जनता पार्टी फरीदाबाद की एक अत्यंत महत्वपूर्ण संगठनात्मक बैठक 'अटल कमल' भाजपा जिला कार्यालय में जिला अध्यक्ष पंकज पूजन रामपाल की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में मंडल

सुदृढ़ीकरण, बूथ मजबूती तथा आगामी संगठनात्मक कार्यक्रमों को लेकर विस्तृत चर्चा की गई। ज़िला अध्यक्ष पंकज पूजन रामपाल ने जिला फरीदाबाद के मंडल अध्यक्षों को एक वर्ष का कार्यकाल सफलतापूर्वक पूर्ण होने पर उन्हें बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि मंडल अध्यक्षों एवं मंडल कार्यकर्ताओं की मेहनत, निष्ठा और समर्पण के कारण ही फरीदाबाद जिला हरियाणा के अग्रणी जिलों में शामिल है, जिसका श्रेय मंडल अध्यक्ष और मंडल की पूरी टीम को जाता है। ज़िला अध्यक्ष ने मंडल प्रभारियों के साथ मंडल के संगठनात्मक कार्यों की समीक्षा की और संगठन मंजबूत करने एवं संगठनात्मक कार्यों को समय पर पूर्ण करने के निर्देश दिये। श्री रामपाल ने कहा कि भाजपा का कार्यकर्ता ही पार्टी की असली शक्ति है। अनुशासन, निष्ठा और सक्रियता के साथ संगठन को और अधिक सशक्त बनाना हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है। उन्होंने मंडल अध्यक्षों से संगठन की कार्यपद्धति, संगठन विस्तार, शक्तिकेंद्र एवं बूथ गठन, मंडल प्रवास तथा अन्य संगठनात्मक विषयों पर विस्तार से चर्चा की। बैठक में 'मन की बात' कार्यक्रम को लेकर भी विशेष चर्चा हुई। 'मन की बात' की जिला संयोजक अरुणिमा सिंह ने बताया कि पिछले 6 महीनों से फरीदाबाद जिले के सभी 877 बूथों पर मन की बात कार्यक्रम सुना गया तथा इसकी 100% रिपोर्टिंग 'सरल ऐप' पर सफलतापूर्वक की गई है। इसके लिए उन्होंने सभी मंडल अध्यक्षों एवं मंडल टीमों को बधाई दी। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि आगे भी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के इस राष्ट्रहितकारी संवाद कार्यक्रम को प्रत्येक बूथ पर सामूहिक रूप से सुना जाएगा और नियमित रूप से इसकी फोटो रिपोर्टिंग सरल ऐप पर की जाएगी। बैठक में जिला महामंत्री चौधरी प्रवीण गर्ग, वरिष्ठ भाजपा नेता वज़ीर सिंह डागर, जिला उपाध्यक्ष विक्रम सिंह अरुआ, धर्मबीर भड़ाना, भारती भाकुनी, जिला सचिव गिर्राज त्यागी, मनीष छोंकर, पुनीता झा, तरनजीत भाटिया, जिला मीडिया प्रभारी विनोद गुप्ता, किसान मोर्चा ज़िला अध्यक्ष जेजू ठाकुर, आईटी प्रमुख शिवम रतन, 'मन की बात' जिला संयोजक अरुणिमा सिंह, मंडल अध्यक्ष हरीश बैसला, राजेश चौधरी, अमित आहूजा, गौरव चौधरी, मुकेश कुमार झा, तृप्ति माला, शुभांकित गुप्ता, महेश कुमार, सहित अनेक वरिष्ठ पदाधिकारी, भाजपा मण्डल प्रभारी, मण्डल अध्यक्ष, मन की बात के जिला, विधानसभा, मंडल संयोजक व सह संयोजक, आईटी के जिला, विधानसभा एवं मंडल प्रमुख, सह प्रमुख, सभी मोर्चों के आईटी जिला व मंडल प्रमुख, सह प्रमुख उपस्थित रहे।

स्वास्थ्य मंत्री आरती राव गणतंत्र दिवस समारोह में फहराएंगी तिरंगा

डीसी आयुष सिन्हा ने गणतंत्र दिवस समारोह स्थल का किया निरीक्षण

अतुल्य लोकतंत्र/संवाददाता

फरीदाबाद। हरियाणा सरकार में स्वास्थ्य मंत्री आरती राव जिला फरीदाबाद में 26 जनवरी को जिला स्तरीय गणतंत्र दिवस समारोह कार्यक्रम में बतौर मुख्यातिथि शिरकत करेंगी। उपायुक्त (डीसी) आयुष सिन्हा ने आज वीरवार को सेक्टर-12 हैलीपेड ग्राउंड में समारोह स्थल की तैयारियों का जायजा लिया। डीसी आयुष सिन्हा ने बताया कि कार्यक्रम स्थल पर टेंट, बैकड्रॉप, बैरिकेडिंग, मोबाइल टॉयलेट, पेयजल तथा आमजन की सुविधा से जुड़ी सभी आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित की जा रही हैं। मार्च पास्ट एवं झांकियों के संचालन की प्रक्रिया भी निर्धारित कर ली गई है। कार्यक्रम की फाइनल रिहर्सल 24 जनवरी को आयोजित की जाएगी। उन्होंने इस दौरान सभी विभागों के अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि वे अपनी-

अपनी तैयारियां पूरी रखें। गणतंत्र दिवस समारोह के दौरान मुख्य अतिथि का स्वागत करने, राष्ट्रीय ध्वज फहराने की व्यवस्था, वीआईपी स्वतंत्रता सेनानियों के परिजनों और समाज सेवी संस्थाओं के सम्मानित होने वाले प्रतिनिधियों के बैठने की व्यवस्था सहित सांस्कृतिक कार्यक्रमों, परेड की टुकड़ियों की रिहर्सल तथा मैन स्टेज की व्यवस्था, माईक सर्विस, प्रैस गैलरी, बिजली, पानी, साफ सफाई, रंगोली सहित अन्य व्यवस्थाओं का जायजा लिया। इस अवसर पर एडीसी सतबीर मान, डीसीपी सेंट्रल उषा, एसडीएम फरीदाबाद अमित कुमार, सीटीएम अंकित कुमार सहित अन्य अधिकारीगण मौजूद रहे।

प्रमुख नागरिक गोष्ठी में संघ की 100 वर्ष की यात्रा एवं समाज परिवर्तन के विषयों पर संवाद

• जैसा व्यक्ति होगा वैसा समाज होगा और जैसा समाज वैसा देश होगा

अतुल्य लोकतंत्र/संवाददाता

फरीदाबाद। महानगर पूर्व में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा एक प्रमुख नागरिक गोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसका मुख्य विषय सीए, टैक्स एवं फाइनेंस कंसल्टेंट्स, बैंकर एवं यंग प्रोफेशनल्स के लिए है। यह कार्यक्रम संघ के शताब्दी वर्ष के कार्यक्रमों की श्रृंखला में समाज के प्रमुख जनों से संघ की 100 वर्ष की यात्रा एवं समाज परिवर्तन के विषयों पर संवाद का एक महत्वपूर्ण आयोजन है। सेक्टर-16 ए स्थित ग्रांड कोलम्बस स्कूल में संघ शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. राकेश गुप्ता और विशिष्ट अतिथि के रूप में जिला टैक्स बार फरीदाबाद के

अध्यक्ष एस.के.भारद्वाज उपस्थित रहे। डॉ.गुप्ता ने अपने वक्तव्य में टैक्स और वित्त क्षेत्र में पेशेवरों के लिए नैतिकता और राष्ट्रीय दृष्टिकोण के महत्व पर जोर दिया। विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री एस के भारद्वाज ने कहा कि संघ को ऐसे विषयों पर कार्यक्रमों का आयोजन करते रहना चाहिए। मुख्य वक्ता के रूप में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ हरियाणा प्रांत प्राध्यापक प्रमुख एवं शिक्षाविद प्रोफेसर पवन सिंह ने अपने उद्बोधन में समाज के सामूहिक पुरुषार्थ और राष्ट्रीय चेतना के विकास पर जोर देते हुए कहा कि संघ विगत 100 वर्षों से राष्ट्र साधना एवं सेवाकार्य में रत है और यह यात्रा समाज के सहयोग तथा आशीर्वाद से अत्यन्त गौरवमयी तथा प्रेरणादायी बनी है। उन्होंने बताया कि हिंदू दर्शन की स्वीकार्यता देश-विदेश में सर्वत्र तेजी से बढ़ रही है। शिक्षाविद प्रो.पवन सिंह ने अपने संबोधन में समाज में जागरूकता लाने के तरीकों का उल्लेख करते हुए स्वदेशी, नागरिक कर्तव्य, पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक समरसता और कुटुम्ब प्रबोधन के अंतर्गत संघ का उद्देश्य परिवारों को भारतीय संस्कृति, परंपराओं और मूल्यों के प्रति सजग करना है। उन्होंने बताया कि संघ के पंच परिवर्तन ही समाज परिवर्तन का सशक्त माध्यम बनेगा। कार्यक्रम स्थल पर संघ 100 वर्षों के सेवा कार्यों की चित्र प्रदर्शनी के साथ साथ राष्ट्रीय विचारों के साहित्य और गौ सेवा का स्टॉल विशेष आकर्षण का केंद्र रहा।

प्रशासन की प्राथमिकता जनता की समस्या का शीघ्र समाधान: डीसी आयुष सिन्हा

▸▸ डीसी विक्रम सिंह ने सुनी जनता की समस्याएं, मौके पर ही दिए समाधान के निर्देश

अतुल्य लोकतंत्र/दीपक शर्मा

फरीदाबाद। हरियाणा सरकार की पहल पर प्रदेशभर में आमजन की समस्याओं के त्वरित समाधान हेतु आयोजित किए जा रहे समाधान शिविर अभियान के तहत वीरवार को फरीदाबाद के सेक्टर-12 स्थित लघु सचिवालय के सभागार में समाधान शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर की अध्यक्षता उपायुक्त (डीसी) आयुष सिन्हा ने की। डीसी आयुष सिन्हा ने बताया कि समाधान शिविरों के माध्यम से नागरिकों की विभिन्न प्रशासनिक और शासकीय विभागों से जुड़ी समस्याओं का तुरंत निपटारा किया जा रहा है। इन शिविरों में लोगों को विशेष रूप से स्वास्थ्य, शिक्षा, प्रॉपर्टी आईडी, परिवार पहचान पत्र, भूमि पंजीकरण, समाज कल्याण पेंशन, राशन कार्ड, स्थानीय निकायों से नो-ड्यूज प्रमाण पत्र, नगरपालिका

द्वारा नक्शा पास करवाने, बिजली, सिंचाई, सार्वजनिक स्वास्थ्य और आपराधिक शिकायतों जैसी सेवाओं का लाभ मिल रहा है। उन्होंने आमजन से अपील की कि यदि किसी नागरिक को इन विषयों में किसी भी प्रकार की परेशानी है तो वह निःसंकोच समाधान शिविर में आकर अपनी शिकायत दर्ज कराए। डीसी आयुष सिन्हा ने बताया कि यह अभियान मुख्यमंत्री की 'जन-सेवा, समर्पण और समाधान' की सोच को धरातल पर उतारने का एक प्रभावी माध्यम है। उन्होंने कहा कि समाधान शिविर का मुख्य उद्देश्य प्रशासन और आम जनता के बीच सीधा संवाद स्थापित करना है, ताकि लोगों की समस्याओं का त्वरित एवं प्रभावी समाधान सुनिश्चित किया जा सके। शिविर में जिले के विभिन्न क्षेत्रों से बड़ी संख्या में नागरिक पहुंचे और अपनी समस्याओं से संबंधित आवेदन प्रस्तुत किए। इस अवसर पर डीसी आयुष सिन्हा ने सभी विभागों के अधिकारियों की उपस्थिति में एक-एक आवेदक की बात गंभीरता से सुनी और मौके पर मौजूद संबंधित विभागों के अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए। उन्होंने अधिकारियों को समस्याओं के शीघ्र, पारदर्शी एवं प्रभावी समाधान के लिए तत्परता से कार्य करने को कहा। डीसी आयुष सिन्हा ने बताया कि जिला प्रशासन हर सोमवार और वीरवार को सुबह 10 से 12 बजे तक लघु सचिवालय में जनता की समस्याएं सुनकर त्वरित समाधान सुनिश्चित कर रहा है। उन्होंने कहा कि शिकायत समाधान शिविरों में नागरिकों की भागीदारी सरकार और प्रशासन पर उनके भरोसे को दर्शाती है। समाधान शिविर में एसडीएम फरीदाबाद अमित कुमार, एमसीएफ के संयुक्त आयुक्त गजेंद्र सिंह सहित अन्य सभी संबंधित विभागों के अधिकारीगण मौजूद रहे।

77 वें गणतंत्र दिवस समारोह की हुई फुल ड्रेस फाइल रिहर्सल

डीसी ने जिला स्तरीय गणतंत्र दिवस समारोह के लिए फुल ड्रेस रिहर्सल में तैयारियों का लिया जायजा

- प्रतिभागियों ने फुल ड्रेस रिहर्सल में सांस्कृतिक कार्यक्रमों व मार्च पास्ट का किया प्रदर्शन
- स्वास्थ्य मंत्री आरती राव गणतंत्र दिवस समारोह में फहराएंगी तिरंगा

अतुल्य लोकतंत्र/दीपक शर्मा

फरीदाबाद। उपायुक्त (डीसी) आयुष सिन्हा ने 77वें जिला स्तरीय गणतंत्र दिवस समारोह की फुल ड्रेस फाइल रिहर्सल में आज शनिवार को ध्वज फहराया व परेड का निरीक्षण कर सलामी ली। आज फाइनल रिहर्सल में 26 जनवरी को आयोजित होने वाले सभी कार्यक्रम क्रमवार आयोजित किए गए। गणतंत्र समारोह की सम्पूर्ण तैयारियों को पूरा करने को लेकर सम्बंधित विभागों के अधिकारियों को दिशा-निर्देश भी दिए गए। डीसी आयुष सिन्हा ने बताया कि जिला फरीदाबाद में 26 जनवरी को आयोजित होने वाले समारोह में मुख्यातिथि के रूप में हरियाणा सरकार में स्वास्थ्य मंत्री श्रीमती आरती राव शिरकत करेंगी। उन्होंने बताया कि उप-मंडल स्तर पर भी गणतंत्र दिवस समारोह आयोजित किए जाएंगे, जिनमें बल्लभगढ़ स्थित दशहरा ग्राउंड में पूर्व मंत्री व विधायक मूलचंद शर्मा और एनआईटी-01 स्थित दशहरा ग्राउंड में बड़खल विधायक धनेश अदलखा द्वारा राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा फहराया जाएगा। डीसी आयुष सिन्हा ने जिला स्तरीय समारोह के फाइनल रिहर्सल के दौरान सुबह 9:58 पर ध्वज फहराया। इसके पश्चात डीसी आयुष सिन्हा और पुलिस उपायुक्त सतेंद्र कुमार गुप्ता के साथ खुली जीप में सवार होकर परेड का निरीक्षण किया। परेड कमाण्डर के नेतृत्व में हरियाणा पुलिस टुकड़ी (पुरुष), हरियाणा पुलिस टुकड़ी (महिला), हरियाणा होमगार्ड टुकड़ी, एनसीसी सीनियर की टुकड़ी, भारतीय स्काउट की टुकड़ी और प्रजातंत्र के प्रहरी की टुकड़ी द्वारा मार्च पास्ट में भाग लिया गया। सर्व प्रथम राजकीय महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं द्वारा पीटी और सूर्य नमस्कार का प्रदर्शन किया गया। जिसके पश्चात समारोह में देशभक्ति व देश प्रेम की भावना से ओतप्रोत गीतों पर राजकीय कन्या महाविद्यालय सराय ख्वाजा की छात्राओं ने आरंभ है प्रचंड मस्तकों, जय हो, देश रंगीला रंगीला देश मेरा रंगीला, पीएम श्री स्कूल एनआईटी 2 के विद्यार्थियों ने पंजाबी और हरियाणवी, राजकीय कन्या महाविद्यालय ओल्ड फरीदाबाद देश भक्ति गीत, शिर्डी साईं बाबा स्कूल तिगांव के विद्यार्थियों ने आईएम इंडिया जैसे गीत पर मनमोहक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। फाइल रिहर्सल का समापन राष्ट्रीय गान से हुआ। इस अवसर पर एडीसी सतबीर मान, डीसीपी उषा कुंडू, एसडीएम अमित कुमार, सीटीएम अंकित कुमार, डीआईपीआरओ मूर्ति दलाल, जिला शिक्षा अधिकारी अंशुल सिंगला सहित अन्य विभागों के अधिकारी भी उपस्थित रहे। आज बल्लभगढ़ स्थित दशहरा ग्राउंड में आगामी गणतंत्र दिवस समारोह को लेकर रिहर्सल का आयोजन किया गया। रिहर्सल के दौरान एसीपी जितेश कुमार ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया और एसडीएम मयंक भारद्वाज ने कार्यक्रम की तैयारियों का निरीक्षण किया। इस अवसर पर एसीपी जितेश कुमार ने सुरक्षा व्यवस्था, परेड, सांस्कृतिक कार्यक्रमों और मंचीय व्यवस्थाओं का बारीकी से जायजा लिया तथा संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि गणतंत्र दिवस का आयोजन अनुशासन, गरिमा और देशभक्ति की भावना के साथ किया जाना चाहिए। रिहर्सल में (सेंट जॉनस , विद्यासागर इंटरनेशनल, बल्लबगढ़ कन्या कान्वेंट, राजकीय कन्या विद्यालय) स्कूलों के विद्यार्थियों ने देशभक्ति गीतों पर मनमोहक नृत्य प्रस्तुत किया, जिसे उपस्थित अधिकारियों व दर्शकों ने सराहा। बच्चों की प्रस्तुतियों में राष्ट्रप्रेम और उत्साह साफ झलकता नजर आया।

मोदी का नया भारत व नायब सैनी का नया हरियाणा लिख रहा विकास के नये आयाम: कृष्णपाल गुर्जर

केंद्रीय राज्य मंत्री गुर्जर ने प्रधानमंत्री मोदी के नये भारत की तस्वीर को उकेरा

अतुल्य लोकतंत्र/मुकेश बघेल

पलवल। केंद्रीय सहकारिता राज्य मंत्री कृष्णपाल गुर्जर ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व में बदल रही देश-प्रदेश की विकास की तस्वीर को प्रभावी रूप में उकेरा। उन्होंने दावा किया 11वीं से चौथी अर्थव्यवस्था बन चुका भारत देश जल्द ही तीसरी अर्थव्यवस्था बनेगा। साथ ही उन्होंने घोषणा की कि पलवल को जल्द ही मेट्रो की सौगात दी जाएगी, जिसका काम वर्ष-2026 में ही शुरू करवाया जाएगा। पलवल की अनाज मंडी में रविवार को नव मिलन समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए केंद्रीय राज्य मंत्री कृष्णपाल गुर्जर उपस्थित जनसमूह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने लोगों को व उनके परिवार को नव वर्ष के साथ लोहड़ी व मकर संक्रांति की बधाई दी। इस दौरान उन्होंने विशेष रूप से मोदी के नये भारत की बदलती तस्वीर की चर्चा की। उन्होंने कहा कि जनता के अटूट विश्वास के बूते ही केंद्र व प्रदेश में तीसरी बार भाजपा की सरकार बनी है। प्रधानमंत्री मोदी व पूर्व मुख्यमंत्री मनोहर लाल तथा वर्तमान मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने जनता के विश्वास को परिणाम दिए हैं, जिससे विकास तीव्र गति से जारी है। प्रधानमंत्री मोदी का नया भारत व नायब सिंह सैनी का नया हरियाणा आज विकास के नये आयाम लिख रहा है। सरकार का एक ही लक्ष्य है कि अंतिम पायदान में खड़े व्यक्ति का कल्याण किया जाए। श्री गुर्जर ने कहा कि मोदी का नया भारत संकट में जीवन का अहसास कराता है। कोरोना काल व यूक्रेन युद्ध तथा हर संकट के समय में मोदी के नेतृत्व में देश के नागरिकों की रक्षा की गई है। पहले रेल चलती थी किंतु आज दौड़ती है। लाल चौक पर पहले तिरंगा फहराने की बात भी नहीं होती थी जबकि आज स्थाई तौर पर तिरंगा स्थापित किया गया है। मोदी के नये भारत में पत्थरबाजों पर नकेल कस दी है और आतंकवादियों को घर में घुसकर मारा जाता है। नक्सलवाद समाप्ति की ओर है। पहले 125 जिलों में नक्सलवाद था जबकि आज यह मात्र 10 जिला में रह गया है। गृह मंत्री ने घोषणा की है कि मार्च-2026 तक देश पूर्ण रूप से नक्सलवाद मुक्त होगा। अब चंबल में फसलें लहराती हैं। नव वर्ष पर अब लोग धार्मिक स्थानों की यात्रा करते हैं। जवाबी कार्रवाई के लिए देश की सेना को अब दिल्ली के हुक्म का इंतजार नहीं करना पड़ता। नये भारत में भ्रष्टाचार के लिए कोई जगह नहीं है।

श्री विश्वकर्मा कौशल विश्वविद्यालय में धूमधाम से मना वसंत उत्सव

अतुल्य लोकतंत्र/मुकेश बघेल

पलवल। श्री विश्वकर्मा कौशल विश्वविद्यालय के कृषि फ़ार्म पर बृहस्पतिवार को वसंत पंचमी उत्सव धूमधाम से मनाया गया। विद्यार्थियों ने वसंत ऋतु के स्वागत में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया और फूलों तथा कृषि उत्पादों पर आधारित प्रदर्शनी भी लगाई। विश्वविद्यालय की कुलसचिव प्रोफ़ेसर ज्योति राणा ने मुख्य अतिथि के रूप में समारोह का उद्घाटन किया। उन्होंने कहा कि वसंत पंचमी के दिन ही माता सरस्वती का अवतरण हुआ था। माता सरस्वती विद्या की देवी हैं। उनसे कामना है कि सभी को विद्या और कलाओं से निपुण करें। प्रोफ़ेसर ज्योति राणा ने विद्यार्थियों को वसंत ऋतु के महत्व और कृषि के साथ उसके जुड़ाव के बारे में भी बताया। उन्होंने विद्यार्थियों को कृषि क्षेत्र में अपना करियर बनाने और उद्यमिता को अपनाने का भी आह्वान किया। कृषि संकाय के डीन प्रोफ़ेसर डीवी पाठक ने अतिथियों का स्वागत किया और कृषि संकाय की गतिविधियों तथा उपलब्धियों के बारे में जानकारी दी। इस अवसर पर विशिष्ट रूप में उपस्थित रहे ग्रीन टेक्नोलॉजी डिपार्टमेंट के चेयरपर्सन डॉ. सुनील गर्ग और कुलगुरु के विशिष्ट कार्य अधिकारी संजीव तायल ने भी विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन किया। विद्यार्थियों ने इस अवसर पर विदेशी फूलों की प्रदर्शनी भी लगाई और साथ ही विश्वविद्यालय के केन्द्र में उत्पादित शहद, सब्जियों व अन्य उत्पादों को प्रदर्शनी में शामिल किया और साथ ही छात्राओं ने खाद्य पदार्थों के स्टॉल लगाकर अपनी पाक कला का नमूना पेश किया। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थियों ने खूब वाहवाही बटोरी।

सतयुग दर्शन संगीत कला केंद्र में 'ज्ञान, कला और उमंग का महापर्व बसंत पंचमी का भव्य आयोजन

अतुल्य लोकतंत्र/दीपक शर्मा

फरीदाबाद। सतयुग दर्शन संगीत कला केंद्र में सांगीतिक बैठक के अंतर्गत 'बसंत पंचमी एवं गणतंत्र दिवस' के उपलक्ष्य में एक भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ सतयुग दर्शन संगीत कला केंद्र के मैनेजर श्री एस एन गोगिया जी तथा प्रधानाचार्य श्री दीपेंद्र कांत जी द्वारा दीप प्रज्ज्वलन के साथ किया गया। तत्पश्चात सरस्वती माता के भावपूर्ण भजनों, मनोहारी नृत्य प्रस्तुतियों तथा देशभक्ति गीतों एवं नृत्यों की सुंदर प्रस्तुति देकर उपस्थित सभी अतिथियों एवं दर्शकों का मन मोह लिया। कार्यक्रम के दौरान प्राचार्य दीपेंन्द्र कांत द्वारा उपस्थित विद्यार्थियों को यह भी बताया गया कि बसंत पंचमी, जिसे विक्रम पंचमी भी कहा जाता है, माँ सरस्वती की आराधना का पावन पर्व है। इस दिन विद्या, बुद्धि, कला और संगीत की देवी माँ सरस्वती की पूजा की जाती है। यह दिन ज्ञान, नई शुरुआत और सकारात्मक ऊर्जा का प्रतीक माना जाता है, तथा इसी दिन से ऋतु परिवर्तन होकर बसंत ऋतु का आगमन होता है। इस कार्यक्रम में सतयुग दर्शन संगीत कला केंद्र के विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता निभाई। मेघा द्वारा राग भैरव पर आधारित बंदिश प्रस्तुत की गई। सभी बच्चों की प्रस्तुतियों में शास्त्रीय संगीत की झलक के साथ-साथ अनुशासन एवं साधना की स्पष्ट झलक देखने को मिली। सरस्वती वंदना से वातावरण ज्ञान और भक्ति से ओत-प्रोत हो गया, वहीं देशभक्ति गीतों एवं नृत्यों ने सभी के हृदय में राष्ट्रप्रेम की भावना को और प्रबल किया। इसके पश्चात रवि, विकास, पूजा, मेघा, शिवांजलि, कुंदन मिश्रा आर के वशिष्ठ, रिशिता एवं अन्य विद्यार्थियों द्वारा राग बसंत में एक विशेष प्रस्तुति पेश की गई, सरस्वती पूजा के मध्य प्रधानाचार्य श्री दीपेंद्र कांत जी ने सभी बच्चों को बसंत पंचमी एवं गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ दीं तथा उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। उन्होंने बच्चों के निरंतर अभ्यास और उत्कृष्ट प्रस्तुतियों की सराहना करते हुए उन्हें आगे बढ़ते रहने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम का मंच संचालन रवि तथा पूजा द्वारा अत्यंत प्रभावशाली एवं सुव्यवस्थित रूप से किया गया। कार्यक्रम के अंत में सभी विद्यार्थियों को सर्टिफिकेट्स आदि से सम्मानित भी किया गया। समग्र रूप से यह कार्यक्रम अत्यंत सफल, प्रेरणादायक एवं स्मरणीय रहा, जिसने बच्चों के सांस्कृतिक, नैतिक एवं कलात्मक विकास को सुदृढ़ किया। इस अवसर पर केशव शुक्ला , मिस्टर संजय बिड़लान एवं मिस दिशा हरे उपस्थित रहे।

बड़खल के दशहरा ग्राउंड में 77वें गणतंत्र दिवस समारोह की रिहर्सल सफलतापूर्वक संपन्न

एसडीएम त्रिलोक चंद ने गणतंत्र दिवस रिहर्सल का किया निरीक्षण

अतुल्य लोकतंत्र/संवाददाता

फरीदाबाद। 77वें गणतंत्र दिवस समारोह की तैयारियों के तहत बड़खल (एनआईटी) स्थित दशहरा ग्राउंड में आज भव्य रिहर्सल का सफल आयोजन किया गया। इस रिहर्सल का उद्देश्य गणतंत्र दिवस कार्यक्रम को अनुशासन, गरिमा एवं देशभक्ति की भावना के साथ सुव्यवस्थित रूप से संपन्न करना रहा। रिहर्सल के दौरान बड़खल के उप-मंडल अधिकारी (एसडीएम) त्रिलोक चंद ने ध्वज फहराया तथा समस्त कार्यक्रम एवं व्यवस्थाओं का गहन निरीक्षण किया। एसडीएम त्रिलोक चंद ने रिहर्सल के दौरान सुरक्षा व्यवस्था, परेड की तैयारियों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, मंचीय व्यवस्थाओं एवं दर्शक दीर्घा की व्यवस्थाओं का बारीकी से जायजा लिया। उन्होंने संबंधित विभागों के अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश देते हुए कहा कि गणतंत्र दिवस जैसे राष्ट्रीय पर्व का आयोजन अत्यंत अनुशासन, गरिमा एवं राष्ट्रप्रेम की भावना के साथ किया जाना चाहिए। उन्होंने यह भी निर्देश दिए कि कार्यक्रम के दौरान किसी भी प्रकार की अव्यवस्था न हो तथा आम नागरिकों की सुविधा और सुरक्षा का विशेष ध्यान रखा जाए। रिहर्सल के दौरान परेड अभ्यास को भी अंतिम रूप दिया गया, जिसमें प्रतिभागी टुकड़ियों ने पूर्ण अनुशासन और समन्वय का परिचय दिया। उन्होंने कहा कि परेड गणतंत्र दिवस समारोह का महत्वपूर्ण हिस्सा होती है और इसमें उत्कृष्टता का प्रदर्शन होना चाहिए। सांस्कृतिक कार्यक्रमों की रिहर्सल में विभिन्न विद्यालयों के विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। राजकीय कन्या विद्यालय (एनआईटी), स्काईलार्क ग्लोबल स्कूल एवं राजकीय कन्या विद्यालय, पाली के विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत देशभक्ति गीतों एवं नृत्य प्रस्तुतियों ने उपस्थित अधिकारियों और दर्शकों का मन मोह लिया। बच्चों की प्रस्तुतियों में देश के प्रति प्रेम, समर्पण और उत्साह स्पष्ट रूप से झलकता नजर आया। इन कार्यक्रमों ने संपूर्ण वातावरण को राष्ट्रभक्ति की भावना से ओत-प्रोत कर दिया। कार्यक्रम के सफल आयोजन को सुनिश्चित करने के लिए जिला प्रशासन, पुलिस प्रशासन, शिक्षा विभाग, नगर निगम, स्वास्थ्य विभाग तथा अन्य संबंधित विभागों की टीमें रिहर्सल के दौरान उपस्थित रहीं। सभी विभागों ने आपसी समन्वय के साथ अपनी-अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन किया।

अंतरराष्ट्रीय सूरजकुंड हस्तशिल्प मेला 31 से : उपराष्ट्रपति करेंगे उद्घाटन, सीएम बटन सैनी करेंगे अध्यक्षता

देशों के कलाकार होंगे शामिल, मिस्र कंट्री पार्टनर

अतुल्य लोकतंत्र/दीपक शर्मा

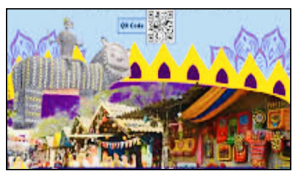

फरीदाबाद। जिले के ऐतिहासिक सूरजकुंड परिसर में 31 जनवरी से 15 फरवरी तक 39वें अंतरराष्ट्रीय सूरजकुंड हस्तशिल्प मेले का आयोजन किया जाएगा। मेले का उद्घाटन देश के उपराष्ट्रपति सी.पी. राधाकृष्णन करेंगे, जबकि कार्यक्रम की अध्यक्षता हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी करेंगे। इस बार मेला वैश्विक सहभागिता और नई तकनीकी सुविधाओं के चलते खास रहने वाला है। मेले में 45 देशों के कलाकार अपनी पारंपरिक कला और संस्कृति का प्रदर्शन करेंगे। लगातार तीसरी बार मिस्र को कंट्री पार्टनर बनाया गया है, जबकि उत्तर प्रदेश को थीम स्टेट के रूप में चुना गया है। अब तक मिडिल ईस्ट, मिस्र समेत 25 देशों के कलाकारों की भागीदारी को लेकर सहमति मिल चुकी है। वहीं बांग्लादेश और ईरान से कलाकारों के आने को लेकर स्थिति अभी स्पष्ट नहीं हो पाई है। आयोजन में देश-विदेश के बुनकरों, कारीगरों और हस्तशिल्पियों को 1200 से अधिक स्टॉल आबंटित किए जा चुके हैं। इस बार टर्की की सजावटी फेंसिंग लाइटें और ट्यूनीशिया की ओलिव वुड से बनी कलाकृतियां पर्यटकों के लिए विशेष आकर्षण होंगी। थीम स्टेट उत्तर प्रदेश के पवेलियन में फिरोजाबाद की कांच की चूड़ियां, कन्नौज की इत्र परंपरा, आजमगढ़ की ब्लैक पॉटरी और वाराणसी, लखनऊ व भदोही की जरी-जरदोजी कला को प्रमुखता से प्रदर्शित किया जाएगा। पर्यटन विभाग की ओर से लोक नृत्य, लोक संगीत, हस्तशिल्प और पारंपरिक व्यंजनों के माध्यम से प्रदेश की सांस्कृतिक झलक पेश की जाएगी। ओडीओपी योजना के तहत प्रदेश के 40 विशेष हस्तशिल्प स्टॉल लगाए जाएंगे, जिससे स्थानीय कारीगरों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी कला दिखाने का अवसर मिलेगा। मेले में रोजाना सुबह 10 बजे से शाम 6 बजे तक सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। लोकनृत्य, लोकगीत और पारंपरिक प्रस्तुतियों के साथ तीन विशेष अवसरों पर फैशन शो भी होंगे, जिनमें पारंपरिक और आधुनिक परिधानों के साथ आभूषणों की झलक देखने को मिलेगी। मेला परिसर के पाथवे पर विभिन्न जिलों की पहचान को दर्शाने वाले डिजाइन बनाए जाएंगे। हर शिल्प और जिले के लिए विशेष साइनेज और क्यूआर कोड लगाए जाएंगे, जिनके जरिए पर्यटक शिल्प निर्माण प्रक्रिया और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि की जानकारी ले सकेंगे। पर्यटकों की सुविधा के लिए पार्किंग शुल्क का भुगतान फास्टैग के जरिए भी किया जा सकेगा। नकद और अन्य डिजिटल भुगतान विकल्प भी उपलब्ध रहेंगे। प्रशासन ने पांच स्थानों पर पार्किंग स्थल विकसित किए हैं, जहां एक साथ हजारों वाहन खड़े किए जा सकेंगे। इस बार सूरजकुंड मेले में पूर्वोत्तर भारत की संस्कृति भी खास तौर पर प्रदर्शित की जाएगी। अरुणाचल प्रदेश के तवांग मठ, असम के कामाख्या मंदिर और मेघालय की खासी हिल्स जैसे पर्यटन स्थलों की झलक के साथ-साथ आठों पूर्वोत्तर राज्यों की लोक कला, पारंपरिक वेशभूषा और खानपान पर्यटकों को आकर्षित करेगा। मेले के नोडल अधिकारी हरविंद्र सिंह यादव के अनुसार, इस बार करीब 1300 से अधिक स्टॉल लगाए जाएंगे और हर स्टॉल किसी न किसी राज्य या देश की सांस्कृतिक पहचान को दर्शाएगा। हर साल की तरह इस बार भी करीब 10 लाख से अधिक पर्यटकों के पहुंचने की उम्मीद है।

फरीदाबाद राजेश चेची, डीसीपी (जीआरपी) के आगमन से जगमगाया ह्यूमन लिगल ऐड का गणतंत्र दिवस आयोजन

अतुल्य लोकतंत्र/दीपक शर्मा

फरीदाबाद। 26 जनवरी गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में ह्यूमन लीगल ऐड एंड क्राइम कंट्रोल ऑर्गनाइजेशन ने दो दिन पूर्व ही उत्साहपूर्ण कार्यक्रम का आयोजन किया। मेट्रो हॉस्पिटल कैंसर इंस्टीट्यूट के सभागार में आयोजित इस समारोह में फरीदाबाद राजेश चेची, डीसीपी (जीआरपी) ओल्ड फरीदाबाद मुख्य अतिथि रहे, जबकि महिला थाना की सेक्टर 16 की उषा रानी एसएचओ और सेक्टर 21 एन. आई. टी. महिला थाना की एसएचओ माया विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित हुईं। कार्यक्रम में फरीदाबाद नगर निगम वार्ड 32 की पार्षद शेफाली सिंघला भी शिरकत करने पहुंचीं। संस्था के सदस्यों ने राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ किया और देशभक्ति गीतों, नृत्य प्रस्तुतियों के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम के वीरों को नमन किया। फरीदाबाद राजेश चेची, डीसीपी (जीआरपी) ओल्ड फरीदाबाद ने अपने संबोधन में संस्था की सामाजिक सेवाओं की सराहना करते हुए कहा, 'ऐसी संस्थाएं समाज को मजबूत बनाती हैं। गणतंत्र दिवस का सच्चा उत्सव यही है कि हम सेवा के माध्यम से राष्ट्र निर्माण में योगदान दें।' महिला थाना की सेक्टर 16 की उषा रानी एसएचओ ने युवाओं को अपराधमुक्त समाज बनाने का संदेश दिया। वही एन. आई. टी. महिला थाना की एसएचओ माया ने गणतंत्र दिवस के अवसर पर ह्यूमन लीगल ऐड एंड क्राइम कंट्रोल ऑर्गेनाइजेशन संस्था ने नुक्कड़ नाटक के माध्यम से नशा मुक्ति और साइबर अपराधों के खिलाफ जन जागरूकता अभियान चलाया। नाटकों ने लोगों को नशे के दुष्प्रभावों और ऑनलाइन धोखाधड़ी के खतरों पर प्रभावी ढंग से जागरूक किया। कार्यक्रम में सचिन, प्रियांशु श्रीवास्तव,आयुष त्रिवेदी, ऐश्वर्या शर्मा, अश्मित कुमार, अमन शर्मा, पल्लवी कुमारी,लखन आदि उपस्थित रहे। सेक्टर 16 महिला थाना की एसएचओ ऊषा रानी ने नाटकों की प्रस्तुति की भूरी-भूरी प्रशंसा की और संस्था के प्रयासों को सामाजिक सेवा का उत्कृष्ट उदाहरण बताया। एसएचओ ऊषा रानी ने कहा, 'ऐसे नुक्कड़ नाटक समाज को अपराधों से बचाने का सशक्त माध्यम हैं। संस्था का यह प्रयास सराहनीय है।' संस्था के पदाधिकारियों ने बताया कि यह अभियान नियमित रूप से चलाया जाएगा। समारोह में अपने संबोधन में अपराध नियंत्रण, नशा मुक्ति और कानून व्यवस्था पर जोर दिया। उन्होंने युवाओं से सामाजिक सेवा के जरिए राष्ट्र निर्माण में योगदान देने का आह्वान किया। संस्था के पदाधिकारियों ने बताया कि यह आयोजन गणतंत्र दिवस की भावना को जीवंत रखने के उद्देश्य से किया गया, जिसमें संस्था के संस्थापक अनुराग शर्मा, संस्था की महासचिव राधिका बहल, कोषाध्यक्ष गुलशन कुमार, हरियाणा प्रदेश अध्यक्ष मनोज राजपूत,सचिव जया जायसवाल, सहसचिव शालिका, और महिला विंग प्रदेश अध्यक्ष प्रिया चोपड़ा आदि सदस्यों और आमंत्रित अतिथियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान से हुआ।

अग्रवाल महाविद्यालय बल्लबगढ़ में मतदाता जागरूकता रैली का आयोजन

अतुल्य लोकतंत्र/संवाददाता

बल्लभगढ़। अग्रवाल महाविद्यालय बल्लबगढ़ में 24 जनवरी 2026को राजनीति शास्त्र विभाग और चुनावी साक्षरता प्रकोष्ठ द्वारा My vote, My pride : Celebrating Democracy थीम पर मतदाताओं को जागरूक करने के लिए एक मतदाता जागरूक रैली का आयोजन किया गया। इस रैली का आयोजन महाविद्यालय और अग्रवाल विद्याप्रचारिणी सभा के अध्यक्ष देवेन्द्र कुमार गुप्ता और महासचिव दिनेश कुमार गुप्ता एडवोकेट की सद्प्रेरणा से, और महाविद्यालय कार्यकारी प्राचार्य डा. संजीव गुप्ता के दिशा निर्देशन में किया गया। महाविद्यालय कार्यकारी प्राचार्य डा.संजीव गुप्ता ने हरी झंडी दिखाकर रैली को रवाना करते हुए विद्यार्थीयों को मतदान का महत्व बताते हुए कहा कि मतदान लोकतंत्र की आधारशिला है 18 वर्ष के हर व्यक्ति को अपना मत बनवाना चाहिए। सशक्त लोकतंत्र के लिए प्रत्येक व्यक्ति को अपना मत बिना किसी प्रलोभन के सोच समझ कर करना चाहिए और योग्य प्रत्याशी को वोट देना चाहिए और लोकतंत्र के निर्माण में भागीदारी करनी चाहिए।

एयर इंडिया ने न्यूयॉर्क और नेवार्क की उड़ानें कीं रद्द, अमेरिका में भीषण विंटर स्टॉर्म का खतरा

नई दिल्ली (एजेंसी)। अमेरिका के ईस्ट कोस्ट में संभावित भीषण और ऐतिहासिक विंटर स्टॉर्म को देखकर एयर इंडिया ने 25 और 26 जनवरी को न्यूयॉर्क और न्यू जर्सी के नेवार्क से आने-जाने वाली अपनी सभी उड़ानें रद्द कर दी हैं। एयरलाइन ने यह फैसला यात्रियों और क्रू मेंबर्स की सुरक्षा को प्राथमिकता देते हुए लिया है। एयर इंडिया द्वारा जारी ट्रैवल एडवाइजरी के अनुसार, न्यूयॉर्क, न्यू जर्सी और आसपास के इलाकों में रविवार सुबह से सोमवार तक भारी बर्फबारी, तेज ठंडी हवाएं और अत्यधिक ठंड पड़ने की आशंका है। ऐसे हालात में हवाई संचालन बुरी तरह प्रभावित हो सकता है। एयरलाइन ने कहा है कि 'यात्रियों और क्रू की सुरक्षा, सुविधा और भलाई को ध्यान में रखते हुए 25 और 26 जनवरी को न्यूयॉर्क और नेवार्क से संचालित होने वाली सभी उड़ानें रद्द की जा रही हैं।' यात्रियों को सलाह दी गई है कि वे अपनी फ्लाइट की ताज़ा स्थिति जानने के लिए एयर इंडिया की आधिकारिक वेबसाइट, मोबाइल एप या कस्टमर केयर से संपर्क बनाए रखें। साथ ही, टिकट रिफंड और रीबुकिंग से जुड़ी जानकारी भी वहीं उपलब्ध है। उधर, अमेरिका इस समय एक रिकॉर्ड तोड़ विंटर स्टॉर्म की चपेट में है। नेशनल वेदर सर्विस ने चेतावनी जारी करते हुए कहा है कि यह तूफान सेंट्रल प्लेन्स से लेकर नॉर्थ-ईस्ट तक करोड़ों लोगों को प्रभावित कर सकता है। भारी बर्फबारी, बर्फीली बारिश और खतरनाक ठंड के चलते कई इलाकों में सड़कें बंद होने, बिजली आपूर्ति बाधित होने और यात्रा व्यवस्था पूरी तरह ठप होने की आशंका जताई गई है। मौसम विशेषज्ञों ने लोगों से अपील की है कि बेहद जरूरी होने पर ही यात्रा करें और आधिकारिक मौसम अपडेट पर नजर बनाए रखें।

एमपी में रेल हादसा : मक्सी स्टेशन के पास मालगाड़ी पटरी से उतरी, दो हिस्सों में बंटी

शाजापुर (एजेंसी)। मध्यप्रदेश के शाजापुर जिले में एक बड़ा रेल हादसा होते-होते टल गया, जब मक्सी रेलवे स्टेशन के पास एक मालगाड़ी अचानक पटरी से उतर गई। हादसे में मालगाड़ी दो हिस्सों में बंट गई, हालांकि राहत की बात यह रही कि घटना में किसी प्रकार की जनहानि नहीं हुई। प्राप्त जानकारी के अनुसार हादसा मेन लाइन की पटरी टूटने के कारण हुआ। बताया जा रहा है कि मालगाड़ी का संतुलन बिगड़ते ही उसके कई डिब्बे पटरी से उतर गए और जमीन में धंस गए। गनीमत यह रही कि घटना के समय इस रूट से कोई यात्री ट्रेन नहीं गुजर रही थी, अन्यथा नुकसान कहीं अधिक हो सकता था। घटना की सूचना मिलते ही रेलवे प्रशासन में हड़कंप मच गया। रेलवे के वरिष्ठ अधिकारी और कर्मचारी तुरंत मौके पर पहुंचे और स्थिति का जायजा लिया। साथ ही ट्रैक की मरम्मत का कार्य भी तत्काल शुरू कर दिया गया। हालांकि जब मीडिया ने अधिकारियों से जानकारी लेने की कोशिश की तो उन्होंने जांच पूरी होने तक कोई आधिकारिक बयान देने से परहेज किया। हादसे के बाद मेन लाइन बंद होने से कई यात्री ट्रेनों की आवाजाही प्रभावित हुई। कुछ ट्रेनों को रोक दिया गया, जबकि एक लाइन को आंशिक रूप से चालू कर ट्रेनों को धीमी गति से निकाला गया। स्टेशन प्रबंधन के अनुसार प्रथम दृष्टया यह घटना ट्रैक की तकनीकी खराबी के कारण प्रतीत हो रही है। घटना की विस्तृत जांच के लिए उज्जैन से रेलवे अधिकारियों की एक टीम मौके पर पहुंच रही है। जांच रिपोर्ट आने के बाद ही हादसे के वास्तविक कारणों का खुलासा हो सकेगा।

केरल में भाजपा ने लोकपाल की नियुक्ति का किया विरोध

तिरुवनंतपुरम(एजेंसी)। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने केरल में लोकपाल की नियुक्ति का विरोध कर इस वैधानिक रूप से गलत बताया है। भाजपा के राज्य अध्यक्ष राजीव चंद्रशेखर और महासचिव वकील एस. सुरेश ने लोक भवन में राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ अर्लेकर से मुलाकात कर याचिका सौंपकर कैबिनेट द्वारा जस्टिस (रिटायर्ड) बाबू मैथ्यू पी. जोसेफ्को लोकपाल नियुक्त करने के फैसले पर आपत्ति जता दी। भाजपा ने केरल लोकायुक्त अधिनियम-1999 की धारा 5(3) का हवाला देकर कहा कि यह प्रावधान किसी पूर्व लोकायुक्त या उप लोकायुक्त को किसी सरकारी या स्वायत्त निकाय में पद संभालने से रोकता है। भाजपा का तर्क है कि लोकपाल एक सरकारी फंड से वेतन पाने वाला वैधानिक पद है और इस पर मनमानी व्याख्या नहीं की जा सकती। केरल बीजेपी ने चेतावनी दी कि इस प्रावधान का उल्लंघन करने वाली कोई भी नियुक्ति कानूनी रूप से अमान्य होगी और न्यायिक जांच के दायरे में आएगी। भाजपा ने कहा कि लोकपाल जैसी संस्थाओं की स्वतंत्रता बनाए रखना जरूरी है, क्योंकि ये संस्थाएं जमीनी स्तर पर शासन की निगरानी करती हैं और जनता का विश्वास बनाए रखने में अहम भूमिका निभाती हैं। पार्टी ने राज्यपाल से अनुरोध किया कि वह अपने संवैधानिक विवेक का उपयोग कर कैबिनेट के फैसले को वैधानिक आधार पर पुनर्विचार के लिए वापस भेजें। राज्यपाल कार्यालय ने 'एक्स' पर भी मुलाकात की जानकारी देकर लिखा कि भाजपा नेताओं ने कानूनी प्रावधानों का हवाला देकर लोकपाल नियुक्ति का विरोध किया।

डोडा हादसे में चनौली का जवान जोबनप्रीत शहीद, सीएम मान ने जताया दुख

चंडीगढ़ (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के डोडा जिले में गुरुवार को सेना का वाहन खाई में गिरने से 10 जवान शहीद हो गए थे। इस हादसे में पंजाब के रोपड़ जिले के गांव चनौली के रहने वाले जवान जोबनप्रीत सिंह (23) भी शहीद हो गए। पंजाब के सीएम भगवंत मान ने जोबनप्रीत सिंह की शहादत पर शोक व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि शहीद जोबनप्रीत सिंह की शहादत पर पूरे प्रदेश को गर्व है। सीएम मान ने शहीद जवान के परिवार के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त की और कहा कि देश के प्रति उनके साहस, कर्तव्यनिष्ठा और बलिदान को हमेशा याद रखा जाएगा। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक सीएम भगवंत मान ने एक्स पर लिखा- बीते दिनों जम्मू-कश्मीर के डोडा में जवानों से भरी एक बस के गहरी खाई में गिर जाने से 10 बहादुर जवान शहीद हो गए थे। उन शहीदों में जिला रोपड़ के गांव चनौली के जोबनप्रीत सिंह के शहीद होने की दुखद खबर मिली है। परिवार के प्रति गहरी संवेदना। देश के प्रति शहीद जवान के साहस को हम नमन करते हैं। इस कठिन घड़ी में सरकार शहीद के परिवार के साथ खड़ी है। परिवार को हर संभव मदद दी जाएगी। इस हादसे पर पीएम मोदी, गृह मंत्री अमित शाह, जम्मू-कश्मीर के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा, सीएम उमर अब्दुल्ला समेत कई नेताओं ने दुख जताया। तमाम नेताओं ने शहीद जवानों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त की और घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की प्रार्थना की।

ओडिशा के अप्रैल में होने वाले राज्यसभा चुनाव में वरिष्ठ पत्रकार डॉ. पबित्र मोहन सामंतराय हो सकते है राज्यसभा प्रत्याशी

अतुल्य लोकतंत्र/दीपक कुमार शर्मा

नई दिल्ली। ओडिशा में आगामी 2 अप्रैल को होने वाले राज्यसभा चुनाव को लेकर राजनीतिक सरगर्मियां तेज हो गई हैं। बी जे पी और बीजू जनता दल (बीजद) के बीच जटिल राजनीतिक समीकरण बनते नजर आ रहे हैं। चार राज्यसभा सीटों के रिक्त होने से यह चुनाव बेहद रोचक हो गया है। आपको बता दें ओडिशा से राज्यसभा में BJD के 7 और भाजपा के 3 सदस्य हैं। भाजपा सांसद सुजीत कुमार और ममता मोहंता, तथा बीजद सांसद मुजिबुल्ला खान और निरंजन बिसी का कार्यकाल 2 अप्रैल को समाप्त हो रहा है, जिससे चार सीटें रिक्त होंगी। विधानसभा में मौजूदा संख्या बल के आधार पर भाजपा के दो और बीजद के एक सीट जीतने की स्थिति में होने की संभावना है। हालांकि चौथी सीट को लेकर कड़ा मुकाबला माना जा रहा है और यही सीट राजनीतिक अटकलों का केंद्र बनी हुई है। राज्यसभा चुनाव के नियमों के अनुसार, एक उम्मीदवार को जीत के लिए कम से कम 30 मतों की आवश्यकता होती है। भाजपा के पास 79 विधायक हैं, जबकि तीन निर्दलीय विधायकों का समर्थन भी उसे प्राप्त है। वहीं, दो विधायकों के निलंबन के बाद बीजद की संख्या 48 रह गई है। कांग्रेस के पास 14 विधायक हैं, जबकि माकपा का एक विधायक है। तीन सुनिश्चित सीटों के बाद भाजपा के पास लगभग 22 अतिरिक्त वोट बचते हैं, जबकि बीजद के पास 18 वोट। चौथी सीट जीतने के लिए भाजपा को कम से कम आठ अतिरिक्त विधायकों के समर्थन की जरूरत होगी, वहीं बीजद को 12 विधायकों का समर्थन चाहिए। कांग्रेस और माकपा के कुल 15 वोट होने के कारण कांग्रेस को इस चुनाव में 'किंगमेकर' के रूप में देखा जा रहा है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि भाजपा-बीजद के बीच कथित समझौते को लेकर कांग्रेस द्वारा लगाए गए आरोपों के बावजूद, इस बार बीजद के लिए कांग्रेस का समर्थन हासिल करना आसान नहीं होगा। वहीं भाजपा के लिए भी बीजद का समर्थन पाकर तीसरी सीट जीतना आसान नहीं दिख रहा है। हालांकि, 'राज्य हित' के नाम पर दोनों दलों के बीच किसी रणनीतिक समझौते की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता है। ओडिशा में 2 अप्रैल को होने वाले राज्यसभा चुनाव को लेकर राज्य की राजनीति में सरगर्मियां तेज हो गई हैं। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और बीजू जनता दल (बीजद) के बीच जटिल राजनीतिक समीकरण बनते नजर आ रहे हैं। चार राज्यसभा सीटों के रिक्त होने से यह चुनाव बेहद अहम और रोचक हो गया है। वर्तमान में ओडिशा से राज्यसभा में बीजद के सात और भाजपा के तीन सदस्य हैं। भाजपा सांसद सुजीत कुमार और ममता मोहंता, तथा बीजद सांसद मुजिबुल्ला खान और निरंजन बिसी का कार्यकाल 2 अप्रैल को समाप्त हो रहा है, जिससे चार सीटें रिक्त होंगी। विधानसभा में मौजूदा संख्या बल के आधार पर भाजपा के दो और बीजद के एक सीट जीतने की स्थिति में होने की संभावना है। हालांकि चौथी सीट को लेकर कड़ा मुकाबला माना जा रहा है और यही सीट राजनीतिक अटकलों का केंद्र बनी हुई है। राज्यसभा चुनाव के नियमों के अनुसार, एक उम्मीदवार को जीत के लिए कम से कम 30 मतों की आवश्यकता होती है। भाजपा के पास 79 विधायक हैं, जबकि तीन निर्दलीय विधायकों का समर्थन भी उसे प्राप्त है। वहीं, दो विधायकों के निलंबन के बाद बीजद की संख्या 48 रह गई है। कांग्रेस के पास 14 विधायक हैं, जबकि माकपा का एक विधायक है। तीन सुनिश्चित सीटों के बाद भाजपा के पास लगभग 22 अतिरिक्त वोट बचते हैं, जबकि बीजद के पास 18 वोट। चौथी सीट जीतने के लिए भाजपा को कम से कम आठ अतिरिक्त विधायकों के समर्थन की जरूरत होगी, वहीं बीजद को 12 विधायकों का समर्थन चाहिए। कांग्रेस और माकपा के कुल 15 वोट होने के कारण कांग्रेस को इस चुनाव में 'किंगमेकर' के रूप में देखा जा रहा है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि भाजपा-बीजद के बीच कथित समझौते को लेकर कांग्रेस द्वारा लगाए गए आरोपों के बावजूद, इस बार बीजद के लिए कांग्रेस का समर्थन हासिल करना आसान नहीं होगा। वहीं भाजपा के लिए भी बीजद का समर्थन पाकर तीसरी सीट जीतना आसान नहीं दिख रहा है। हालांकि, 'राज्य हित' के नाम पर दोनों दलों के बीच किसी रणनीतिक समझौते की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता है। इन्हीं समीकरणों के बीच ओडिशा और राष्ट्रीय मीडिया जगत में जिस नाम की सबसे अधिक चर्चा हो रही है, वह है वरिष्ठ पत्रकार और सामाजिक कार्यकर्ता डॉ. पबित्र मोहन सामंतराय। डॉ. सामंतराय ओड़िया दैनिक पर्यवेक्षक और अंग्रेज़ी दैनिक द कलिंग क्रॉनिकल समूह के प्रधान संपादक हैं। वे राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ, नेशनल मीडिया कन्फेडरेशन और इंडियन फेडरेशन ऑफ स्मॉल एंड मीडियम न्यूज़पेपर्स, नई दिल्ली के राष्ट्रीय अध्यक्ष भी हैं। राष्ट्रीय स्तर के मीडिया नेता के रूप में डॉ. सामंतराय ने पत्रकारों और मीडिया संस्थानों के अधिकार, सुरक्षा और कल्याण से जुड़े मुद्दों को लगातार मजबूती से उठाया है। उनकी सक्रिय भूमिका के कारण कई बार केंद्र सरकार का ध्यान मीडिया से जुड़े नीतिगत सुधारों की ओर गया है। डॉ. सामंतराय वैदिक इंटरनेशनल फाउंडेशन और महर्षि इंटरनेशनल ज्ञान फाउंडेशन के अध्यक्ष भी हैं। पिछले चार दशकों से वे वैदिक ज्ञान, भारतीय परंपराओं, योग और ध्यान के वैश्विक प्रचार-प्रसार में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। उनके प्रयासों से देशभर में, विशेषकर ओडिशा में, अनेक स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय, वैदिक विज्ञान विद्यापीठ, योग-ध्यान और आयुर्वेद केंद्र स्थापित हुए हैं। गौरतलब है कि डॉ. सामंतराय ने वर्ष 2009 में भाजपा उम्मीदवार के रूप में ओडिशा के बड़चना विधानसभा क्षेत्र से चुनाव भी लड़ा था। हालांकि अभी तक यह स्पष्ट नहीं हुआ है कि वे किस दल के टिकट पर राज्यसभा चुनाव लड़ेंगे, लेकिन विश्वसनीय सूत्रों के अनुसार उनकी उम्मीदवारी लगभग तय मानी जा रही है, जिससे भुवनेश्वर से लेकर नई दिल्ली तक राजनीतिक और मीडिया हलकों में चर्चा तेज हो गई है।

पंजाब कांग्रेस में रार? राहुल गांधी की बैठक से दूरी के बाद नवजोत सिद्धू ने किया शायराना हमला

चंडीगढ़ (एजेंसी)। पंजाब कांग्रेस के भीतर असंतोष के सुर एक बार फिर तेज होते दिख रहे हैं। शशि थरूर के बाद अब पंजाब कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष नवजोत सिंह सिद्धू के रुख को भी पार्टी नेतृत्व के प्रति नाराजगी से जोड़कर देखा जा रहा है। इस खींचतान की ताजा वजह बनी है राहुल गांधी द्वारा बुलाई गई एक महत्वपूर्ण बैठक। दिल्ली में आयोजित इस बैठक में वर्ष 2027 में होने वाले पंजाब विधानसभा चुनाव को लेकर भविष्य की रणनीति पर विस्तृत चर्चा की गई, लेकिन चौंकाने वाली बात यह रही कि नवजोत सिंह सिद्धू को इसमें आमंत्रित नहीं किया गया।

राहुल गांधी ने गुरुवार को दिल्ली में पंजाब कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं के साथ मंथन किया। इस बैठक में प्रदेश के मौजूदा और पूर्व कई दिग्गज पदाधिकारी शामिल हुए, लेकिन पूर्व प्रदेश अध्यक्ष नवजोत सिंह सिद्धू की गैर-मौजूदगी ने सियासी हलकों में कई सवाल खड़े कर दिए। बैठक के ठीक अगले दिन शुक्रवार दोपहर बाद सिद्धू ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर एक वीडियो साझा किया, जिसने कांग्रेस की अंदरूनी राजनीति को लेकर चल रही चर्चाओं को और हवा दे दी है। इस वीडियो में नवजोत सिद्धू अपने चिर-परिचित शायराना अंदाज में अपनी बात कहते नजर आए। उन्होंने सीधे तौर पर किसी का नाम तो नहीं लिया, लेकिन उनके बोल काफी गहरे थे। वीडियो में वे कहते हैं, 'जिसने आपको नहीं बुलाया, उसे दफा कीजिए, हर कोई आपके काबिल नहीं होता और कई बार अकेले रहना ही बेहतर होता है।' सिद्धू के इन शब्दों को राजनीतिक विश्लेषक सीधे तौर पर राहुल गांधी की बैठक में उन्हें नजरअंदाज किए जाने से जोड़कर देख रहे हैं। इसे नेतृत्व के प्रति एक मौन विरोध और कड़ा संदेश माना जा रहा है।

गौरतलब है कि इससे पहले भी कांग्रेस सांसद शशि थरूर के बयानों और सोशल मीडिया पोस्ट्स को पार्टी नेतृत्व से उनकी असहजता के संकेत के रूप में देखा गया था। अब सिद्धू के इस वीडियो ने यह संकेत दिया है कि कांग्रेस में आलाकमान और कुछ कद्दावर नेताओं के बीच खींचतान पूरी तरह खत्म नहीं हुई है।

धर्म और राजनीति के बढ़ते घालमेल समाज के लिए घातक: सुश्री मायावती

लखनऊ (एजेंसी)। बहुजन समाज पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री सुश्री मायावती ने धर्म और राजनीति के बढ़ते घालमेल पर गंभीर चिंता जताकर समाज के लिए घातक बताया है। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश ही नहीं, बल्कि देश के अन्य राज्यों में भी बीते कुछ वर्षों से धार्मिक पर्वों, त्यौहारों, पूजापाठ, स्नान और अन्य आस्थागत आयोजनों में राजनीतिक हस्तक्षेप लगातार बढ़ा है। इसके कारण नए-नए विवाद, तनाव और सामाजिक संघर्ष उत्पन्न हो रहे हैं, जो किसी भी दृष्टि से उचित नहीं हैं।

मायावती ने अपने बयान में कहा कि संकीर्ण राजनीतिक स्वार्थ के लिए धर्म को राजनीति से और राजनीति को धर्म से जोड़ने के गंभीर खतरे हमेशा बने रहते हैं। प्रयागराज में स्नान को लेकर चल रहा विवाद इसका ताजा उदाहरण है, जहां आस्था के विषय को राजनीतिक रंग देने से आपसी अनादर, आरोप-प्रत्यारोप और टकराव की स्थिति पैदा हो गई है। उन्होंने कहा कि ऐसी घटनाएं समाज में सौहार्द बिगाड़ती हैं और आम लोगों के मन में दुख व चिंता स्वाभाविक रूप से उत्पन्न करती हैं।

बसपा प्रमुख मायावती ने जोर देकर कहा कि देश का संविधान और कानून जनहित और जनकल्याणकारी कार्यों को ही वास्तविक राष्ट्रीय धर्म मानता है। संविधान की भावना यही है कि राजनीति को धर्म से और धर्म को राजनीति से अलग रखा जाए। यदि सही नीयत और नीति के साथ इसका ईमानदारी से पालन किया जाए, तब-राजनेता बिना किसी द्वेष और पक्षपात के अपने संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन कर सकते हैं। वर्तमान हालात में भी जनता की यही अपेक्षा है कि सभी वर्गों के सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक हितों की रक्षा निष्पक्षता से की जाए।

उन्होंने प्रयागराज में स्नान को लेकर चल रहे विवाद को आपसी सहमति से शीघ्र सुलझाने की अपील कर कहा कि जितनी जल्दी इसका समाधान होगा, उतना ही बेहतर होगा। उल्लेखनीय है कि माघ मेला के दौरान मौनी अमावस्या के दिन शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती को पालकी में स्नान के लिए जाते समय पुलिस द्वारा रोके जाने से विवाद उत्पन्न हुआ था, जिसके बाद धक्का-मुक्की और धरना जैसी स्थिति बनी। इस प्रकरण में प्रशासन द्वारा जारी नोटिसों के बाद मामला और तूल पकड़ गया तथा राजनीतिक दलों की भी इसमें एंट्री हो गई। अपने बयान के अंत में मायावती ने 'उत्तर प्रदेश दिवस' के अवसर पर प्रदेशवासियों को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं भी दीं।

ट्रेनों पर पत्थरबाजी करने वालों को होगी 1 से 10 साल की जेल, जुर्माना भी लगेगा

-छह महीनों में देशभर में कुल 1,698 घटनाएं हुई, 665 को किया गिरफ्तार

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय रेलवे ने ट्रेनों पर पत्थरबाजी करने वालों के खिलाफ देशव्यापी अभियान चलाया। जुलाई से दिसंबर 2025 के बीच के आंकड़ों के मुताबक पिछले छह महीनों में देशभर में पत्थरबाजी की कुल 1,698 घटनाएं हुई। रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) ने इन मामलों में त्वरित कार्रवाई करते हुए अब तक 665 संदिग्धों को गिरफ्तार किया है। रेलवे अधिकारियों का कहना है कि पत्थरबाजी की यह प्रवृत्ति न केवल सरकारी संपत्ति को नुकसान पहुंचा रही है, बल्कि यात्रियों की सुरक्षा के लिए भी गंभीर खतरा है।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक आरपीएफ की जांच में सामने आया है कि पत्थरबाजों के निशाने पर सबसे ज्यादा वंदे भारत एक्सप्रेस जैसी प्रीमियम ट्रेनें हैं। हालांकि इन आधुनिक ट्रेनों में बेहद मजबूत रीइन्फोर्स्ड कांच लगाए गए हैं, लेकिन भारी पथराव के कारण वे भी टूट रहे हैं। वहीं, सामान्य यात्री ट्रेनों में खिड़की के शीशे टूटने से कई यात्रियों के घायल होने की खबरें हैं। रेलवे ने उन संवेदनशील क्षेत्रों की पहचान की है जहां ऐसी घटनाएं बार-बार होती हैं। इन क्षेत्रों में आरपीएफ की गश्त बढ़ा दी गई है और अपराधियों को पकड़ने के लिए सीसीटीवी फुटेज के साथ-साथ स्थानीय मुखबिरों की मदद ली जा रही है। रेलवे प्रशासन ने साफ कहा है कि यात्रियों की जान जोखिम में डालने वालों को बख्शा नहीं जाएगा। पकड़े गए आरोपियों पर भारतीय रेलवे अधिनियम की गंभीर धाराओं के तहत मुकदमे चलाए जा रहे हैं। इन धाराओं के तहत अपराध की गंभीरता के आधार पर एक साल से लेकर 10 साल तक की जेल का प्रावधान है। रेलवे ने कहा कि वे इन मामलों में जीरो टॉलरेंस की नीति अपना रहे हैं ताकि भविष्य में ऐसी घटनाओं पर अंकुश लगाया जा सके। रेलवे केवल कानूनी कार्रवाई तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इस समस्या की जड़ तक पहुंचने की कोशिश कर रही है।

इसके लिए रेलवे ट्रैक के किनारे स्थित स्कूलों में जागरूकता कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं ताकि बच्चों को इसके कानूनी परिणामों के बारे में बताया जा सके। पटरियों के पास बसी बस्तियों के लोगों को शिक्षित किया जा रहा है कि पत्थरबाजी कैसे किसी की जान ले सकती है। संदिग्ध गतिविधियों पर नजर रखने के लिए ड्रोन और आधुनिक कैमरों का भी इस्तेमाल किया जा रहा है। रेलवे अधिकारियों ने जनता से अपील की है कि वे ऐसी किसी भी घटना की जानकारी तुरंत हेल्पलाइन नंबर पर दें। शेष मामलों में जांच अभी जारी है और जल्द ही अन्य आरोपियों की गिरफ्तारी हो सकती है।

रॉबर्ट वाड्रा मामले पर सुनवाई टली, ईडी ने मांगा अतिरिक्त समय तो कोर्ट हुआ नाराज 26 फरवरी को होगी सुनवाई

पटना (एजेंसी)। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) द्वारा रॉबर्ट वाड्रा के खिलाफ दाखिल की गई चार्जशीट पर संज्ञान लेने को लेकर शनिवार को राऊज एवेन्यू कोर्ट में होने वाली सुनवाई टाल दी गई। अदालत ने मामले की अगली सुनवाई के लिए 26 फरवरी की तारीख तय की है। सुनवाई के दौरान ईडी ने चार्जशीट से संबंधित कुछ आवश्यक दस्तावेज दाखिल करने के लिए अतिरिक्त समय की मांग की, जिस पर कोर्ट ने नाराजगी जताई।

अदालत ने ईडी को कड़ी फटकार लगाते हुए स्पष्ट किया कि जरूरी कागजात जमा करने के लिए यह एजेंसी को दिया जा रहा अंतिम अवसर है। कोर्ट ने कहा कि जांच एजेंसी को समय पर सभी औपचारिकताएं पूरी करनी चाहिए, ताकि न्यायिक प्रक्रिया में अनावश्यक देरी न हो। यह चार्जशीट ब्रिटेन स्थित डिफेंस डीलर संजय भंडारी से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग मामले में दाखिल की गई है। मामले में विदेशी संपत्तियों और कथित अवैध वित्तीय लेन-देन से जुड़े पुराने आरोपों की एक बार फिर गहन जांच की जा रही है। ईडी के अनुसार, रॉबर्ट वाड्रा का नाम संजय भंडारी से संबंधित विदेशी संपत्तियों और वित्तीय लेन-देन के संदर्भ में सामने आया है। एजेंसी का आरोप है कि इन लेन-देन में मनी लॉन्ड्रिंग के तत्व मौजूद हैं, जिनकी जांच मनी लॉन्ड्रिंग निवारण अधिनियम (पीएमएलए) के तहत की जा रही है।

गौरतलब है कि ईडी की यह जांच वर्ष 2016 में संजय भंडारी के ठिकानों पर हुई आयकर विभाग की छापेमारी के बाद शुरू हुई थी। इस दौरान कथित तौर पर कुछ ईमेल और दस्तावेज बरामद किए गए थे, जिनके आधार पर जांच एजेंसियों ने रॉबर्ट वाड्रा और उनके सहयोगियों के साथ भंडारी के संबंधों की पड़ताल शुरू की। जांच पूरी होने के बाद ईडी ने रॉबर्ट वाड्रा को इस मामले में आरोपी बनाया।

एक अन्य संबंधित मामले में ईडी ने अदालत को बताया कि रॉबर्ट वाड्रा को गुरुग्राम में एक विवादित जमीन सौदे से कथित तौर पर 58 करोड़ रुपये की राशि प्राप्त हुई थी। इसमें से 53 करोड़ रुपये स्काई लाइट हॉस्पिटैलिटी के माध्यम से और 5 करोड़ रुपये ब्लू ब्रीज़ ट्रेडिंग के जरिए भेजे गए थे। जांच के दौरान केंद्रीय एजेंसी ने 38.69 करोड़ रुपये मूल्य की 43 अचल संपत्तियों को अस्थायी रूप से अटैच किया है, जिन्हें अपराध की कमाई या उसके समकक्ष बताया गया है।

ईडी ने जुलाई 2025 में पीएमएलए की धारा 50 के तहत रॉबर्ट वाड्रा का बयान भी दर्ज किया था। वहीं, संजय भंडारी पहले से ही विदेश में अघोषित संपत्तियां रखने और अवैध वित्तीय लेन-देन के आरोपों का सामना कर रहा है। अब मामले में 26 फरवरी को होने वाली सुनवाई पर सभी की निगाहें टिकी हुई हैं।

गणतंत्र दिवस परेड में गूंजेगी ऑपरेशन सिंदूर की धमक: शौर्य प्रदर्शन करेंगे राफेल-सुखोई विमान

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के 77वें गणतंत्र दिवस समारोह के अवसर पर कर्तव्य पथ का आसमान भारतीय वायुसेना के अदम्य साहस और अत्याधुनिक मारक क्षमता का गवाह बनेगा। इस वर्ष फ्लाई पास्ट का मुख्य आकर्षण विशेष रूप से तैयार किया गया 'सिंदूर' फॉर्मेशन होगा। यह फॉर्मेशन पिछले वर्ष पाकिस्तान और पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) में नौ आतंकी ठिकानों को ध्वस्त करने वाले ऑपरेशन सिंदूर की सफलता का प्रतीक है। इस ऐतिहासिक फॉर्मेशन में भारतीय वायुसेना के सात शक्तिशाली विमान शामिल होंगे, जिनमें 2 राफेल, 2 मिग-29, 2 सुखोई-30 और एक जैगुआर फाइटर जेट अपनी गर्जना से आसमान को गुंजायमान करेंगे।

भारतीय वायुसेना के अनुसार, इस बार फ्लाई पास्ट में कुल 29 विमान अपनी ताकत का प्रदर्शन करेंगे। इनमें 16 फाइटर जेट, 4 मालवाहक (ट्रांसपोर्ट) विमान और 9 हेलीकॉप्टर शामिल हैं। परेड की शुरुआत में वायुसेना के चार एमआई-17 हेलीकॉप्टर ध्वज फॉर्मेशन में उड़ान भरेंगे, जो राष्ट्रीय ध्वज के साथ-साथ थल सेना, नौसेना और वायुसेना के ध्वज लहराते हुए देश को गौरवन्वित करेंगे। इसके अतिरिक्त, वायुसेना के विमान प्रहार, गरुड़, अर्जन, वरुणा, वजरंग और विजय जैसे विभिन्न प्रभावशाली फॉर्मेशन में भी अपनी सटीक उड़ान का प्रदर्शन करेंगे। गणतंत्र दिवस 2026 का आयोजन विशेष रूप से 'वंदे मातरम' के गौरवशाली 150 वर्षों को समर्पित किया गया है। पूरे समारोह पर राष्ट्रगीत की स्पष्ट छाप दिखाई देगी और वायुसेना का बैंड इससे जुड़ी विशेष धुनें बजाकर देशप्रेम का संचार करेगा। परेड में अनुशासन और नेतृत्व का प्रदर्शन करने के लिए वायुसेना की ओर से विशेष तैयारियां की गई हैं। राष्ट्रीय युद्ध स्मारक पर आयोजित होने वाले श्रद्धांजलि समारोह में स्क्वाड्रन लीडर हेमंत सिंह कन्यार गार्ड ऑफऑनर के कमांडर के रूप में वीर शहीदों को नमन करेंगे। कर्तव्य पथ पर ध्वजारोहण की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी फ्लाइट लेफ्टिनेंट अक्षिता ढांकर निभाएंगी, जबकि स्क्वाड्रन लीडर जगदेश कुमार के नेतृत्व में वायुसेना का मार्चिंग दल अपनी सटीक कदमताल से दर्शकों का मन मोहेगा। फ्लाई पास्ट के समापन चरण में राफेल, सुखोई-30, सी-295, अपाचे और स्वदेशी एलसीएच (प्रचंड) जैसे विमान शामिल रहेंगे। इस बार की परेड में न केवल वायुसेना का अनुशासन और पेशेवर उत्कृष्टता दिखाई देगी, बल्कि तीनों सेनाओं के स्वदेशी हथियारों और उपकरणों का प्रदर्शन भारत की आत्मनिर्भरता को भी दर्शाएगा। समारोह की भव्यता बढ़ाने के लिए इसकी शुरुआत 100 सांस्कृतिक कलाकारों द्वारा पारंपरिक युद्ध-संगीत के साथ की जाएगी, जो कर्तव्य पथ पर शौर्य और संस्कृति का अद्भुत संगम प्रस्तुत करेंगे।

तिरंगा फहराने से पहले जरूरी खास बातें

तिरंगा भारत के राष्ट्रीय गौरव का प्रतीक है। सभी के मार्गदर्शन और हित के लिए भारतीय ध्वज संहिता–2002 में सभी नियमों, रिवाजों, औपचारिकताओं और निर्देशों को एक साथ लाने का प्रयास किया गया है। ध्वज संहिता–भारत के स्थान पर भारतीय ध्वज संहिता–2002 को 26 जनवरी 2002 से लागू किया गया है। यह है तिरंगा फहराने का सही तरीका –

- जब भी तिरंगा फहराया जाए तो उसे सम्मानपूर्ण स्थान दिया जाए। उसे ऐसी जगह लगाया जाए, जहां से वह स्पष्ट रूप से दिखाई दे।
- सरकारी भवन पर तिरंगा रविवार और अन्य छुट्टियों के दिनों में भी सूर्योदय से सूर्यास्त तक फहराया जाता है, विशेष अवसरों पर इसे रात को भी फहराया जा सकता है।
- तिरंगे को सदा स्फूर्ति से फहराया जाए और धीरे–धीरे आदर के साथ उतारा जाए। फहराते और उतारते समय बिगुल बजाया जाता है तो इस बात का ध्यान रखा जाए कि तिरंगे को बिगुल की आवाज के साथ ही फहराया और उतारा जाए।
- तिरंगे का प्रदर्शन सभा मंच पर किया जाता है तो उसे इस प्रकार फहराया जाएगा कि जब वक्ता का मुंह श्रोताओं की ओर हो तो तिरंगा उनके दाहिने ओर हो।
- जब तिरंगा किसी भवन की खिड़की, बालकनी या अगले हिस्से से आड़ा या तिरछा फहराया जाए तो तिरंगे को बिगुल की आवाज के साथ ही फहराया और उतारा जाए।
- तिरंगा किसी अधिकारी की गाड़ी पर लगाया जाए तो उसे सामने की ओर बीचोंबीच या कार के दाईं ओर लगाया जाए।
- फटा या मैला तिरंगा नहीं फहराया जाता है।
- जब तिरंगा फट जाए या मैला हो जाए तो उसे एकांत में पूरा नष्ट किया जाए।
- तिरंगा केवल राष्ट्रीय शोक के अवसर पर ही आधा झुका रहता है।
- किसी दूसरे झंडे या पताका को राष्ट्रीय तिरंगे से ऊंचा या ऊपर नहीं लगाया जाएगा, न ही बराबर में रखा जाएगा।
- तिरंगे पर कुछ भी लिखा या छपा नहीं होना चाहिए।

26 जनवरी की परेड

26 जनवरी की परेड राजपथ के राष्ट्रपति भवन से इंडिया गेट तक मार्च करती है। चलिये अब मैं आपको इस परेड की कुछ खासियत बताता हूँ सबसे पहले, राष्ट्रपति राष्ट्रीय ध्वज को फहराते है। जिसके साथ ही भारत का राष्ट्रीय गान बजाया जाता है, और एक 21–तोपों की सलामी दी जाती है।

राष्ट्रपति क्षेत्र में अपने असाधारण साहस के लिए सशस्त्र बलों से लोगों को बहादुरी के पदक प्रदान करने के लिए आगे आते हैं और जिन्होंने अलग–अलग परिस्थितियों में वीरता के अपने अलग–अलग कार्यों से खुद को प्रतिष्ठित किया है, उनको पुरस्कार से नवाजते हैं। इसके बाद सेना, नौसेना और वायु सेना की कई रेजिमेंटों के साथ उनके बैंड के साथ मार्च किया जाता है, जिसकी प्रैक्टिस यह सेना न जाने कितने समय पहले से करती हैं। उसके उपरांत विभिन्न राज्यों की झांकी उनकी संस्कृति को प्रदर्शित करती हुई उसी राजपथ से निकलती हैं।

एक बीटिंग रिट्रीट समारोह परेड के अंत का प्रतीक है। परेड पारंपरिक रूप से सशस्त्र बलों और नागरिक सुरक्षा सेवाओं की मोटरसाइकिल इकाइयों और भारतीय वायु सेना के जेट विमानों और हेलीकॉप्टर द्वारा एक फ्लाईपास्ट की हिम्मत शैतान मोटर साइकिल की सवारी के प्रदर्शन के साथ समाप्त होती है।

हर साल 23 जनवरी को फुल ड्रेस रिहर्सल परेड का आयोजन किया जाता है। यदि आप परेड देखना चाहते हैं तो आप भी टिकट खरीद कर परेड देखने के लिए 26 जनवरी को लाल किला जा सकते हैं, यकीनन ही आपको बहुत आनंद आएगा।

प्रत्येक इंसान का हर काम को करने का अपना एक तरीका होता है, ठीक इसी तरह से त्योहार भी हम अपने ढंग से मनाना पसंद करते हैं। कुछ लोगों को नए कपड़े और मिठाई खाना पसंद है, तो वही कुछ लोग त्योहार को अपने दोस्तों और रिश्तेदारों के साथ मनाना पसंद करते हैं, वहीं कुछ तो इसे एक आम दिन की तरह ही व्यतित करते हैं। क्योंकि गणतंत्र दिवस एक राष्ट्रीय त्योहार है, झण्डा फहराने, राष्ट्रीय गीत गाना, देशभक्ति गानों पर नृत्य परस्तुति, देशभक्ति गाने, गीत एवं कविताएं का हमारे देश में काफी प्रचलन है।

हमारा गणतंत्र हमारा अभिमान

भारत विविध धर्मों, आस्थाओं और संस्कृतियों का देश है और यहां हर दिन कोई न कोई त्यौहार मनाया जाता है। हर धर्म को मानने वाले लोग पूरे उल्लास के साथ अपने पर्व मनाते हैं, लेकिन कुछ त्यौहार ऐसे भी हैं, जो प्रत्येक देशवासी के लिए महत्वपूर्ण हैं और पूरे देश में सम्मान और स्नेह के साथ मनाए जाते हैं। 26 जनवरी भी एक ऐसा ही दिन है, जो देश का राष्ट्रीय पर्व है। देश का हर नागरिक चाहे वह किसी धर्म, जाति या संप्रदाय से ताल्लुक रखता हो, इस दिन को राष्ट्र प्रेम से ओतप्रोत होकर मनाता है। 26 जनवरी को पूरा देश गणतंत्र दिवस मनाएगा। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली के राजपथ पर देश की सांस्कृतिक विविधता में एकता और सैन्य ताकत की झलक दिखाई देगी।

भारत एक लोकतांत्रिक देश है, और यदि आप भी मेरी ही तरह इस महान देश के नागरिक हैं तो यकीनन ही यह ज्ञात होगा कि 18 वर्ष की आयु पूर्ण होते ही भारत के प्रत्येक वर्ग के नागरिक को अपना नेता वोट देने की प्रक्रिया को फॉलो करते हुए खूद चुनने का अधिकार है और उसके उपरान्त वो नेता अपने साथ कार्यरत नेता के साथ भारत देश की जनता के विकास के लिए कार्य करते हैं।

दोस्तों, आइए आज मैं आपको देश के लोकतांत्रिक देश बनने के सफर के बारे में थोड़ी जानकारी देता हूँ, यदि आपको इतिहास विषय पसंद है तो यकीनन ही आपको 26 जनवरी का इतिहास पढ़ने में अच्छा लगेगा। 1947 में जब देश के स्वतंत्रता सेनानियों के लगातार परिश्रम से भारत को अंग्रेजों से आजादी मिली, तब सवाल खड़ा हुआ कि देश का प्रधानमंत्री किसको बनाया जाए?

हमारे भारत में राष्ट्रीय भावी प्रधानमंत्री के गद्दी लिये 1947 में ही मतदान हुआ था, तो उसी समय से भारत वासियों ने वोट देना शुरू कर दिया था। फर्क सिर्फ इतना था उन दिनों पुरुषों को ही मत देने का अधिकार था, औरते इसमें हिस्सा नहीं लेती थी। मतदान में दो काँग्रेस नेता ने हिस्सा लिया था और जब परिणाम सामने आया तो सरदार पटेल अर्थात भारत के आयरन मैन सरदार वल्लभ भाई पटेल को सर्वाधिक मत मिले। उनके बाद सर्वाधिक मत आचार्य कृपलानी को मिले थे। किन्तु गांधी जी के कहने पर सरदार पटेल और आचार्य कृपलानी ने अपना नाम वापस ले लिया और जवाहरलाल नेहरू को भारत के आजाद होने के बाद पहला प्रधानमंत्री नियुक्त किया गया। 1947 से पूर्व जब भारत में अग्रेज शासन कर रहे थे जब देश में लोकतंत्र नहीं था, और यही कारण था देश के बड़े नेता ने मिल कर सहमति से यह फैसला लिया था कि स्वतंत्र भारत को लोकतांत्रिक बनाया जाएगा। आजादी के कुछ दिन पश्चात 29 अगस्त, 1947 को संविधान सभा में डॉ बी आर की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया जिसके तहत अंबेडकर को भारत के लिए एक संविधान तैयार करने के लिए कहा गया।

संविधान पर विचार–विमर्श करते हुए, विधानसभा ने कुल 7,635 में से 2,473 संशोधनों को स्थानांतरित किया। भारत का संविधान 26 नवंबर, 1949 को बन कर तैयार हुआ और अपनाया गया था और माननीय सदस्यों ने 24 जनवरी, 1950 को इस पर अपने हस्ताक्षर किए।

284 सदस्यों ने वास्तव में संविधान पर हस्ताक्षर कर उसे अपनाया, उस दिन जब संविधान पर हस्ताक्षर किया जा रहा था तब इसे एक अच्छे शगुन के संकेत के रूप में देश की जनता के सामने इसकी व्याख्या की गई थी। भारत का संविधान 26 जनवरी 1950 को लागू हुआ, और तब से भारत के सभी देशवासियों के लिए एक ही नियम और मौलिक अधिकार दिए गए और यह माना गया कि सब समान हैं और 26 जनवरी को प्रतिवर्ष हमने गणतंत्र दिवस के रूप में मनाना आरंभ कर दिया।

राष्ट्रीय पर्व होने के कारण गणतंत्र दिवस के पावन अवसर पर विद्यालयों, विश्वविद्यालयों एव ऑफिस में विभिन्न प्रकार 26 जनवरी पर ड्राइंग कॉम्पिटिशन का आयोजन किया जाता है, जो विद्यार्थी इच्छुक होते है वो अपने आप को हिस्सेदार के रूप में प्रस्तुत करते हैं और बढ़ चढ़ के अपने कला का प्रदर्शन करते हैं। वैसे तो महामारी ने हमे बांध के रख दिया है लेकिन एक तरफ यह भी सत्य है कि कुछ भी रुक नहीं पाया है, दुनिया अपनी तेजी से चल रही है और आगे बढ़ती जा रही है। यदि आने वाले गणतंत्र दिवस पर आपके भी विद्यालय में इस तरह का कोई कॉम्पीटीशन का आयोजन हो रहा है, और आपको अपने घर से ही पोस्टर बना के उसकी तस्वीर ऑनलाइन सोशल मीडिया के माध्यम से अपने शिक्षक के साथ शेयर कर दिखाना है तो आप नीचे दिए गए इमेज कि मदद ले सकते हैं और यकीनन ही आप कोई स्थान भी प्राप्त कर सकते हैं।

पहला गणतंत्र दिवस परेड 26 जनवरी 1950 को आयोजित किया गया था, जिसमें उस समय के इंडोनेशिया के राष्ट्रपति सुकर्णो मुख्य अतिथि के रूप में आए थे। उस परेड के फ्लाईपास्ट में हार्वर्ड, समेकित बी –24 लिबरेटर्स, डकोटा, हॉकर टेम्पेस्ट, स्पिटफायर और जेट विमानों जैसे विमान शामिल थे और कुल मिला कर सौ से अधिक विमान उस परेड में शामिल थे। दिल्ली गणतंत्र दिवस परेड भारत में गणतंत्र दिवस समारोह को चिह्नित करने वाली सबसे बड़ी और सबसे महत्वपूर्ण परेड है। परेड हर साल 26 जनवरी को राजपथ, नई दिल्ली में होती है। दोस्तों राष्ट्रीय त्योहार होने के कारण यह बहुत बड़े लेवल पर भारत में मनाया जाता है और गणतंत्र दिवस समारोह में परेड एक मुख्य आकर्षण का हिस्सा है, जो 3 दिनों तक चलता है।

वंदे मातरम की अमर कहानी

वन्दे मातरम!
सुजलाम, सुफलाम मलयज–शीतलाम
शस्यश्यामलाम मातरम!
वन्दे मातरम!
शुभ्र ज्योत्स्ना पुलकितयामिनीम
फुल्लकुसुमित द्रुमदल शोभिनीम
सुहासिनीम सुमधुरभाषिणीम
सुखदाम, वरदाम, मातरम!
वन्दे मातरम ! वन्दे मातरम !

ब्रिटिश शासन के दौरान देशवासियों के दिलों में गुलामी के खिलाफ आग भड़काने वाले सिर्फ दो शब्द थे– 'वंदे मातरम'। आइए बताते हैं इस क्रांतिकारी, राष्ट्रभक्ति के अजर–अमर गीत के जन्म की कहानी –

बंगाल के महान साहित्यकार श्री बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय के ख्यात उपन्यास 'आनंदमठ' में वंदे मातरम का समावेश किया गया था। लेकिन इस गीत का जन्म 'आनंदमठ' उपन्यास लिखने के पहले ही हो चुका था। अपने देश को मातृभूमि मानने की भावना को प्रज्वलित करने वाले कई गीतों में यह गीत सबसे पहला है। 'वंदे मातरम' के दो शब्दों ने देशवासियों में देशभक्ति के प्राण फूँक दिए थे और आज भी इसी भावना से 'वंदे मातरम' गाया जाता है। हम यों भी कह सकते हैं कि देश के लिए सर्वोच्च त्याग करने की प्रेरणा देशभक्तों को इस गीत से ही मिली। पीढ़ियाँ बीत गई पर 'वंदे मातरम' का प्रभाव अब भी अक्षुण्ण है।

'आनंदमठ' उपन्यास के माध्यम से यह गीत प्रचलित हुआ। उन दिनों बंगाल में 'बंग–भंग' का आंदोलन उफान पर था। दूसरी ओर महात्मा गाँधी के असहयोग आंदोलन ने लोकभावना को जाग्रत कर दिया था। बंग भंग आंदोलन और असहयोग आंदोलन दोनों में 'वंदे मातरम' ने प्रभावी भूमिका निभाई। स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के लिए यह गीत पवित्र मंत्र बन गया था।

बंकिम बाबू ने 'आनंदमठ' उपन्यास 1880 में लिखा। कलकत्ता की 'बंग दर्शन' मासिक पत्रिका में उसे क्रमश: प्रकाशित किया गया। अनुमान है कि 'आनंदमंठ' लिखने के करीब पाँच वर्ष पहले बंकिम बाबू ने 'वंदे मातरम' को लिख दिया था। गीत लिखने के बाद यह यों ही पड़ा रहा। पर 'आनंदमठ' उपन्यास प्रकाशित होने के बाद लोगों को उसका पता चला। इस संबंध में एक दिलचस्प किस्सा है। बंकिम बाबू 'बंग दर्शन' के संपादक थे। एक बार पत्रिका का साहित्य कम्पोज हो रहा था। तब कुछ साहित्य कम पड़ गया, इसलिए बंकिम बाबू के सहायक संपादक श्री रामचंद्र बंदोपाध्याय बंकिम बाबू के घर पर गए और उनकी निगाह 'वंदे मातरम' लिखे हुए कागज पर गई। कागज उठाकर श्री बंदोपाध्याय ने कहा, फिलहाल तो मैं इससे ही काम चला लेता हूँ। पर बंकिम बाबू तब गीत प्रकाशित करने को तैयार नहीं थे। यह बात 1872 से 1876 के बीच की होगी। बंकिम बाबू ने बंदोपाध्याय से कहा कि आज इस गीत का मतलब लोग समझ नहीं सकेंगे। पर एक दिन ऐसा आएगा कि यह गीत सुनकर सम्पूर्ण देश निद्रा से जाग उठेगा। इस संबंध में एक किस्सा और भी प्रचलित है। बंकिम बाबू दोपहर को सो रहे थे। तब बंदोपाध्याय उनके घर गए। बंकिम बाबू ने उन्हें 'वंदे मातरम' पढ़ने को दिया। गीत पढ़कर बंदोपाध्याय ने कहा, 'गीत तो अच्छा है, पर अधिक संस्कृतनिष्ठ होने के कारण लोगों की जुबान पर आसानी से चढ़ नहीं सकेगा।' सुनकर बंकिम बाबू हँस दिए। वे बोले, 'यह गीत सदियों तक गाया जाता रहेगा।' 1876 के बाद बंकिम बाबू ने बंग दर्शन की संपादकी छोड़ दी।

875 में बंकिम बाबू ने एक उपन्यास 'कमलाकांतेर दफ्तर' प्रकाशित किया। इस उपन्यास में 'आभार दुर्गोत्सव' नामक एक कविता है। 'आनंदमठ' में संत–गणों को संकल्प करते हुए बताया गया है। उसकी ही आवृत्ति 'कमलाकांतेर दफ्तर' के कमलकांत की भूमिका निभाने वाले चरित्र के व्यवहार में दिखाई देती है। धीर–गंभीर देशप्रेम और मातृभूमि की माता के रूप में कल्पना करते हुए बंकिम बाबू गंभीर हो गए और अचानक उनके मुँह से 'वंदे मातरम' शब्द निकले। यही इस अमर गीत की कथा है। 1896 में कलकत्ता में काँग्रेस का राष्ट्रीय अधिवेशन हुआ। उस अधिवेशन की शुरुआत इसी गीत से हुई और गायक कौन थे पता है आपको? गायक और कोई नहीं, महान साहित्यकार स्वयं गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर थे। कितना भाग्यशाली गीत है यह, जिसे सबसे पहले गुरुदेव टैगोर ने गाया। यह भी माना जाता है कि बंकिम बाबू एक कीर्तनकार द्वारा गाए गए एक कीर्तन गीत 'एसो एसो बंधु माघ आँचरे बसो' को सुनकर बेहद प्रभावित हुए। गीत सुनकर गुलामी की पीड़ा का उन्होंने तीव्र रूप से अनुभव किया। इस एक गीत ने भारतीय युवकों को एक नई दिशा–प्रेरणा दी, स्वतंत्रता संग्राम का महान उद्देश्य दिया। मातृभूमि को सुजलाम–सुफलाम बनाने के लिए प्रेरित किया। 'वंदे मातरम' इन दो शब्दों ने देश को आत्मसम्मान दिया और देशप्रेम की सीख दी। हजारों वर्षों से सुप्त पड़ा यह देश इस एक गीत से निद्रा से जाग उठा। तो ऐसी दिलचस्प कहानी है वंदे मातरम गीत की।

संविधान की खास बातें

संविधान सभा की प्रथम बैठक सोमवार 9 दिसंबर 1946 को प्रातः 11 बजे शुरू हुई। इसमें 210 सदस्य उपस्थित थे। 11 दिसंबर 1946 को संविधान सभा की बैठक में डॉ. राजेंद्रप्रसाद को स्थायी अध्यक्ष चुना गया, जो अंत तक इस पद पर बने रहे। 13 दिसंबर 1946 को पंडित जवाहरलाल नेहरू ने संविधान का उद्देश्य प्रस्ताव सभा में प्रस्तुत किया, जो 22 जनवरी 1947 को पारित किया गया। इसकी मुख्य बातें इस प्रकार हैं-

- भारत एक पूर्ण संप्रभुता संपन्न गणराज्य होगा, जो स्वयं अपना संविधान बनाएगा।
- भारत संघ में ऐसे सभी क्षेत्र शामिल होंगे, जो इस समय ब्रिटिश भारत में हैं या देशी रियासतों में हैं या इन दोनों से बाहर, ऐसे क्षेत्र हैं, जो प्रभुतासंपन्न भारत संघ में शामिल होना चाहते हैं।
- भारतीय संघ तथा उसकी इकाइयों में समस्त राजशक्ति का मूल स्रोत स्वयं जनता होगी।
- भारत के नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय, पद, अवसर और कानूनों की समानता, विचार, भाषण, विश्वास, व्यवसाय, संघ निर्माण और कार्य की स्वतंत्रता, कानून तथा सार्वजनिक नैतिकता के अधीन प्राप्त होगी।
- अल्पसंख्यक वर्ग, पिछड़ी जातियों और कबायली जातियों के हितों की रक्षा की समुचित व्यवस्था की जाएगी।
- अवशिष्ट शक्तियां इकाइयों के पास रहेंगी।
- 26 जनवरी 1950 को भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ.राजेन्द्र प्रसाद ने 21 तोपों की सलामी के बाद भारतीय राष्ट्रीय ध्वज को फहराकर भारतीय गणतंत्र के ऐतिहासिक जन्म की घोषणा की थी। अंग्रेजों के शासनकाल से छुटकारा पाने के 894 दिन बाद हमारा देश स्वतंत्र राज्य बना। तब से आज तक हर वर्ष समूचे राष्ट्र में गणतंत्र दिवस गर्व और हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है।

देशभक्ति व करियर दोनों हैं अहम

26 जनवरी को पूरा देश 'गणतंत्र दिवस' मनाएगा। यह जश्न है एकता, समानता और स्वतंत्रता का। उन शहीदों को इस पर्व के माध्यम से नमन करने का जिनकी वजह से हमें खुलकर जीने की आजादी मिली। साथ ही सलाम उन जवानों को जो सीमा पर जागते हैं ताकि हम चैन की नींद सो सकें। यह जज्बा धीरे–धीरे कम होता जा रहा है। इसका कारण युवाओं की लाइफस्टाइल में आया बदलाव भी है। ग्लोबलाइजेशन के इस दौर में आज का युवा देशभक्ति से ज्यादा पैसे की ओर रुख कर रहा है। युवा देश के लिए बहुत कुछ करना चाहते हैं, इसलिए उनकी एक राय यह भी है कि आर्मी के अलावा भी किसी फील्ड में रहते हुए देश के विकास में अहम योगदान दे सकते हैं, बशर्ते कि वे अपने फील्ड में ईमानदारी से काम करें।

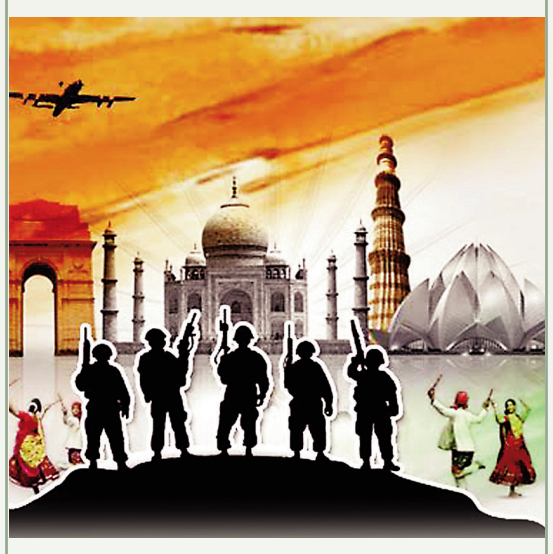

देशभक्ति पर करियर भारी

यश जोशी कहते हैं कि इंडियन आर्मी यानी बेहतर करियर, अनुशासन के साथ सम्मान की जिंदगी। लेकिन आज प्रोफेशनल कोर्सेस के आने के बाद स्टूडेंट को लगता है कि आर्मी में करियर बनाना आसान नहीं है, क्योंकि टफ ट्रेनिंग और घर से दूर जाना उन्हें कम ही रास आता है। वे देशभक्ति की जगह मोटी कमाई को तवज्जो दे रहे हैं। जिन युवाओं में आर्मी के जुनून और देश के लिए कुछ करने का जज्बा होता है जब वे घरवालों से यह बात कहते हैं तो उनके घरवाले चाहते हैं कि वे आर्मी की बजाय दूसरे फील्ड में करियर बनाएँ।

ईमानदारी से कार्य करने की है जरूरत

एमएससी इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की स्टूडेंट राधिका राघव कहती हैं– आजकल युवा सेना में नहीं जाना चाहते हैं हालाँकि देशभक्ति का यह पैमाना कतई नहीं है कि हर व्यक्ति सेना में जाए। देश की सेवा किसी भी रूप में हो सकती है जिसके लिए हमें अपनी फील्ड में ईमानदारी से कार्य करने की जरूरत है। युवा के लिए वास्तव में नाम व पैसे के साथ–साथ समाज व देश के प्रति कुछ कर पा लेने की संतुष्टि और गर्व होना भी जरूरी है।

आज भी है जुनून

आईआईपीएस के स्टूडेंट शुभम शर्मा कहते हैं कि युवाओं में एक बात यह है कि वे खुद की मर्जी के मालिक कुछ ज्यादा ही होते हैं। इसका कारण हमारी लाइफ स्टाइल में आया बदलाव भी है। आज करना है तो बस करना है कि तर्ज पर जिंदगी जीने वाले युवा कहीं भी फोकस नहीं कर पाते या फिर असमंजस की स्थिति में पड़ जाते हैं इसलिए वे जीवन में देशभक्ति व करियर में से किसी एक का चुनाव नहीं कर पाते हैं। वहीं दूसरी ओर आज भी युवा तिरंगे को देखकर रोमांचित होता है। जन–गण–मन सुनकर एक बार सावधान की मुद्रा में खड़ा होने को तैयार रहता है। लेकिन उसे लगता है कि साथ देने वाला कोई नहीं है तो मन मारकर वह देशभक्ति करने से रह जाता है।

करियर भी देशसेवा भी

ईएमआरसी की स्टूडेंट कृणिका सक्सेना कहती हैं कि आज भगतसिंह पैदा नहीं हो सकते लेकिन व्हाइट कॉलर लोगों के भरोसे भी यह देश नहीं चलना है। करियर बनाने के बाद भी हर युवा को देश की सेवा व देश में रहना कम पसंद आता है। इसके लिए युवा जिम्मेदार नहीं हैं। इसका कारण भ्रष्टाचार भी है। लेकिन कई युवा इस दौर में भी अपनी पसंद के करियर के साथ भी देशसेवा कर रहे हैं। वे जता रहे हैं कि देशसेवा भी उनके लिए महत्वपूर्ण है।

Sleep well, cut belly fat to reduce breast cancer risk

ATULYA LOKTANTRA

Breast cancer cases among Indian women are rising by 6% a year, according to a recent ICMR study. Poor sleep, chronic stress and rising central obesity are the key risk factors. Dr Shubham Garg, director of Surgical Oncology at Dharamshila Narayana Hospital, Delhi speaks to Anuja Jaiswal about how lifestyle and metabolic shifts are reshaping risk, why younger women are getting affected, and what they can do to minimise risk

•How strong is the evidence linking disrupted sleep to breast cancer risk in Indian women?

The evidence is steadily strengthening. Recent findings from National Centre for Disease Informatics and Research add Indian data to global research linking disrupted sleep and circadian rhythm disturbance to breast cancer risk. Poor sleep affects melatonin secretion, estrogen regulation, immune surveillance and DNA repair. While it is not a standalone cause, it increases vulnerability when combined with obesity, chronic stress, sedentary behaviour and urban lifestyles — factors now common among Indian women, especially in cities.

•Is poor sleep now a risk factor on a par with family history or age?

Poor sleep does not match non-modifiable factors like age or genetic predisposition, which remain the strongest predictors. However, it is emerging as one of the most important modifiable risk factors. Clinically, many women without a family history present with breast cancer after prolonged sleep deprivation, night-shift work, high stress and metabolic dysfunction. It now forms a crucial part of comprehensive risk assessment. Why does central obesity raise breast cancer risk more than overall body weight, especially after menopause? Central obesity reflects excess visceral fat, which is biologically more active than peripheral fat. It produces inflammatory cytokines, promotes insulin resistance and increases estrogen production. After menopause, adipose tissue becomes the primary source of estrogen, fuelling hormone-receptor-positive breast cancers. Waist circumference correlates more strongly with risk than overall weight and signals chronic inflammation and metabolic stress.

•Can lifestyle changes actually reduce breast cancer risk?

Lifestyle changes cannot eliminate risk but can significantly reduce it. Better sleep restores circadian rhythm, melatonin levels and immune function. Stress control lowers prolonged cortisol exposure, which otherwise drives inflammation and hormonal imbalance. Reducing central obesity lowers estrogen production, improves insulin sensitivity and decreases inflammatory markers. These changes also improve outcomes and reduce recurrence risk in women already treated.

•How does chronic stress affect tumour biology?

Chronic stress raises cortisol levels, suppressing immune surveillance and reducing the body's ability to eliminate abnormal cells. It promotes systemic inflammation, alters glucose metabolism and disrupts estrogen pathways — factors that support tumour initiation and progression. Over time, this creates a biological environment favourable for cancer development.

•Why is breast cancer appearing at younger ages in India? Do risk drivers differ from western countries?

Breast cancer is increasingly being diagnosed in women aged 35–50 years. This shift is linked to sedentary lifestyles, central obesity, poor sleep, chronic stress, delayed childbirth and reduced breastfeeding, which are also breast cancer risk drivers in the West. While genetics still matter, these modifiable factors are accelerating risk at younger ages, highlighting the need for earlier awareness and risk-based screening. Besides, Indian women often face delayed diagnosis. Prevention must, therefore, go beyond mammography to include lifestyle education, metabolic health, stress management and sleep hygiene, supported by community-level counselling.

•How should women delaying childbirth interpret these findings?

With perspective, not fear. Delayed childbirth slightly increases lifetime estrogen exposure, which may modestly raise risk but cancer is not inevitable. Many women delay pregnancy for valid personal and professional reasons. Risk can be mitigated through healthy lifestyle choices, regular physical activity, weight control, good sleep, breastfeeding when possible and appropriate screening.

•Should screening begin earlier for women with obesity, sleep disruption or high stress?

Yes. For women with multiple lifestyle risk factors, earlier and more individualised screening may be appropriate. While population-wide early screening is difficult in India, a risk-stratified approach makes sense. Clinical breast exams, ultrasound or mammography may be considered in the late 30s for women at a higher risk.

'Something's tightening under my skin'

ATULYA LOKTANTRA

MK, a 42-year-old engineer, walked into my OPD along with his wife in August 2023. He had been experiencing swelling and stiffness in his right forearm for the past four months, with a shooting pain from the wrist to the fingers, making simple movements like bending his elbow or turning his wrist difficult. Similar pain and stiffness had begun appearing in both thighs and his left upper arm as well. So much so that he struggled to sit down and stand up. Even lifting his left arm hurt. "It feels as if something inside is tightening," he said. MK had no fever, no weight loss, no breathlessness, no cough, no colour changes in his fingers, and no known allergies or asthma. His hands and feet were normal. That detail stood out. In some autoimmune diseases, the skin on the fingers thickens or changes colour. But here, the extremities were entirely spared — a clue that steered my mind towards a much rarer possibility. On examination, his right elbow movement was restricted. The skin over his forearm and thighs appeared subtly puckered — almost tethered down. His median nerve seemed affected, causing numbness in his fingers. Yet, his muscle strength was normal, reflexes intact, and other organ systems perfectly fine. Eosinophilic Fasciitis, or Shulman syndrome, is a rare inflammatory condition affecting the fascia — the thin layer of connective tissue that surrounds our muscles. It causes painful swelling, tightness, and skin thickening.?Only a few hundred cases have been reported worldwide since it was first described in 1974. Most patients are middle-aged, though it can occur at almost any age. Many doctors may never encounter it in their career. His blood tests revealed high inflammation markers (ESR, CRP) and very high eosinophils — a type of white blood cell that can indicate inflammation. His muscle enzyme levels were normal, helping rule out primary muscle disease. Tests for autoimmune diseases — ANA, Anti-Scl70, Anti-centromere, ANCA — were negative, which helped exclude systemic sclerosis and other mimicking disorders. He was not willing to undergo a biopsy as it was an invasive procedure. So, I ordered an MRI of his thighs. Imaging today often helps confirm what we suspect clinically. The scan showed exactly what I had thought — inflammation and fluid along the fascial layers, with thickening but no muscle damage — a textbook picture of Eosinophilic Fasciitis.

I explained to him and his wife that this was a rare but treatable condition, and that we had caught it early. Relief flooded their faces. People with rare illnesses often fear they are being dismissed or misunderstood. We started treatment with high-dose steroids, carefully adjusted to his body weight and monitored. Alongside, we gave him a steroid-sparing medication to protect him long-term. Physiotherapy became an important part of recovery. I scheduled close follow-ups as rare diseases deserve regular attention. Three months later, he returned smiling. His elbow moved normally, his thighs were supple, his shoulder pain had disappeared, and the skin tightening had eased dramatically. He continued working without interruption. His consistency, trust, and calm courage played a big role in his improvement. I am 75 and, in a career spanning around 35 years, I've seen only two cases of Eosinophilic Fasciitis. But every rare patient reinforces key lessons: awareness, early diagnosis, and trust in treatment matters. This peculiar case shows how rare diseases may masquerade as routine problems.?The case also taught me that not every success in medicine is dramatic. Sometimes, victory looks like a restored elbow bend, a pain-free walk or a man returning to work feeling whole again.

Typhoid myths that delay diagnosis, treatment and recovery

Typhoid fever still affects thousands every year, especially in countries with unsafe water and poor sanitation. The disease is caused by Salmonella Typhi bacteria and spreads through contaminated food and water. Government health bodies like the World Health Organisation (WHO), India's Ministry of Health and Family Welfare (MoHFW), and the US Centers for Disease Control and Prevention (CDC) clearly state that early diagnosis and correct treatment save lives. Yet, many people reach hospitals late. The reason is not lack of medicines, but myths that can delay action. Here are some harmful myths about typhoid that often slow diagnosis, treatment, and recovery.

"Typhoid always starts with very high fever"

Many wait for a dramatic fever before seeking care. This delay can be risky. According to WHO and CDC, typhoid often begins with mild fever, headache, weakness, or stomach discomfort. In the first week, the temperature may rise slowly, not suddenly. Because symptoms look "ordinary," people treat it as viral fever or food poisoning. By the time fever becomes severe, the infection may already be advanced.

"If appetite is okay, it cannot be typhoid"

A common belief is that typhoid patients cannot eat at all. Government health advisories explain that appetite loss varies. Some patients continue to eat small meals during early illness. Children and young adults may even appear active for a few days. This false sense of normalcy delays testing.

What gets missed: Internal infection can progress even when the stomach feels "mostly fine."

"Clean homes cannot have typhoid"

Typhoid is often linked only to poor hygiene. MoHFW clearly notes that even clean homes are at risk if drinking water, raw vegetables, ice cubes, or outside food is contaminated. Typhoid bacteria cannot be seen, smelled, or tasted. The illness does not judge cleanliness, income, or education. Hidden risk: Repeated eating from trusted local vendors without safe water checks.

Baby formula recall across multiple countries: Safety concerns and symptoms to watch

ATULYA LOKTANTRA

A baby's food is closely tied to trust. When that trust is questioned, even briefly, parents deserve clear answers. Nestlé has announced a global recall of certain infant formula batches after finding a quality issue linked to an ingredient from a supplier. The move is precautionary, and no illnesses have been confirmed so far. Still, the recall matters because it involves infant nutrition and a rare toxin called cereulide.

•What exactly is being recalled

Nestlé has recalled specific batches of some infant and follow-on formula products sold across several countries. These include SMA infant formula and follow-on formula, along with other brand names that vary by country. In France, the products include Guigoz and Nidal. In Germany, they include Beba and Alfamino. The recall is batch-specific. This means not all tins on the shelf are affected. Only certain production codes are part of the advisory, and all other Nestlé products remain safe to use.

•Why Nestlé took this step

The recall began after a quality issue was detected in arachidonic acid, or ARA, oil supplied by a leading vendor. ARA oil is commonly added to infant formula to support growth and development. Testing suggested a possible presence of cereulide in the ingredient. Cereulide is a toxin made by some strains of the bacteria Bacillus cereus. Its presence in oils is very rare, but it can cause food poisoning. Nestlé chose to recall the products out of caution, even though no baby has been reported ill. This decision shows a preventive approach rather than a reaction to harm.

•What is cereulide and why it matters

Cereulide can trigger symptoms such as nausea, vomiting, stomach cramps, and diarrhea. These symptoms usually appear fast, between 30 minutes and six hours after exposure. One key concern is that cereulide is heat-stable. The UK Food Standards Agency has warned that it is unlikely to be destroyed by boiling water or during formula preparation. That is why stopping use of affected batches is important, even if the formula was prepared correctly.

•Symptoms to watch and when to act

So far, no illnesses have been confirmed. That is reassuring. Still, parents and caregivers are advised to stay alert. Warning signs include repeated vomiting, diarrhea, or unusual tiredness. If a baby shows any of these symptoms, medical advice should be sought immediately. If no symptoms appear, there is no cause for panic. Even then, use of the recalled batch should stop as advised.

•How parents can check and what to do next

Parents should check the batch number printed on the base of the tin or box. For ready-to-feed formulas, the code may appear on the side or top of the container. Each country's Nestlé or brand website lists the affected batch numbers. If a product is part of the recall, it should not be used. Nestlé has promised full refunds and clear return instructions through local websites. Health professionals can also guide parents who feel unsure about feeding alternatives during this period.

•Why this recall does not point to a wider safety failure

Nestlé has stated that this issue is limited to a non-compliant ingredient from one supplier. The company is working with that supplier on a full root-cause analysis. According to Nestlé, the recall affects less than 0.5% of its annual group sales, and the financial impact is expected to be minimal. More importantly, the company says its broader quality and safety systems remain strong, and authorities in each affected country are involved.

health benefits of eating powdered flax seeds

ATULYA LOKTANTRA

The nutritional value of powdered flax seeds stems from their omega-3 fats, fiber content and lignans, which enable people to incorporate them into their regular diet for improved wellness. While grinding, the outer shell of flaxseeds breaks down, to enable your body to access all health benefits, which whole seeds cannot provide because they stay intact during digestion. A daily intake of one or two tablespoons of this powder enables people to support their digestive system and heart health while controlling their blood sugar levels.

Heart protection from Omega-3s

The plant omega-3 alpha-linolenic acid (ALA) in powdered flax seeds, helps decrease bad cholesterol levels, which results in reduced heart disease risk, through its ability to relax blood vessels. Studies show that patients who have high lipids, can decrease their total cholesterol by 15%, and triglycerides by 20%, when they take 30 grams of this substance daily, for their first three months of treatment. The lignans function as weak estrogen compounds which help decrease blood vessel plaque formation, and reduce inflammation markers, including C-reactive protein. The nutritional profile of flax seeds makes them suitable for people who need to monitor their blood pressure, or have heart conditions in their family. The mixture needs to be mixed with oatmeal or curd during breakfast, to help the body absorb its ingredients better.

Blood sugar control for Diabetics

The high fiber content in powdered flax seeds, helps to slow down carbohydrate digestion, which prevents blood sugar spikes that occur when people eat rice or roti, which are typical foods in Indian cuisine. The gel-like substance of soluble mucilage in your gut traps sugars, which results in an 8-week reduction of 10-15 mg/dL in fasting glucose levels among type 2 patients. Studies indicate that people who drink two tablespoons of this substance each day, will experience a 25% boost in their insulin sensitivity, which equals the positive effects of specific oral drugs, yet without any negative side effects. The compound lignans helps patients with diabetes, because it fights oxidative stress, which leads to nerve pain as one of the complications of diabetes.

Gut health and easy digestion

The intestinal cleaning properties of powdered flax seeds contain 2-3 grams of fiber, which helps people with constipation and maintains their gut bacteria balance. The mucilage treatment helps IBS patients by calming their bowel irritation, which leads to a 30% decrease in bloating and pain symptoms during four weeks of treatment. Research indicates that people who eat fiber each day, will have easier bowel movements, which require less straining and they will not need to use laxatives. Prebiotic fibers serve as food for beneficial bacteria, which produce short-chain fats that benefit both colon health and immune system function. The powder needs to be combined with smoothies or buttermilk to start the gel-forming process. The product contains omega nutrients which make it superior to psyllium supplements. The treatment provides patients with comfortable relief during their time with hemorrhoids, and their recovery from surgical operations. Along with this, you should drink eight glasses of water each day, because fiber absorbs water which helps prevent cramps. The process of steady waste elimination through long-term use helps to decrease colon cancer markers.

Asolear Pharma
Asolear Aesthetics Pvt. Ltd.
Asolear Education QC MAS
Asolear® Group
26 JANUARY REPUBLIC DAY Celebration
Asolear® Group of Companies
Legacy Since 2013
Abacus Education "All Kind of Allopathy, Ayurvedic, Medicines & Cosmetics.
Branches : Delhi & NCR Okhla Phase-1, Sarita Vihar, Noida Sector-151
Contact Us : 9810540839
Asolear® Group of Companies
Scan For WhatsApp Community

लोकतंत्र के महापर्व
देश की अखंडता एवं एकता के प्रतीक
गणतंत्र दिवस
की आप सभी को
हार्दिक शुभकामनाएं
गिरीश शर्मा
1. युवा उद्यमी एवं समाजसेवी
2. सलाहकार सदस्य: अतुल्य लोकतंत्र
Mob. 9350000800
Sector-07 Faridabad (Haryana)

Criterion ISO 9001:2015 Registered
ALMONARD PRIVATE LIMITED
लोकतंत्र के महापर्व
देश की अखंडता एवं एकता के प्रतीक
गणतंत्र दिवस
की आप सभी को
हार्दिक शुभकामनाएं
26 JANUARY REPUBLIC DAY Celebration
AVNISH VERMA
GENERAL MANAGER
(NORTH)
Ph.: 011-41403002, 43021640, 45678348
420, 2nd Floor, Functional Indl. Estate Patparganj Industrial Area, Delhi -92
E-mail: almonard.del@gmail.com
Website: www.almonard.co.in

Criterion ISO 9001:2015 Registered
ALMONARD PRIVATE LIMITED
लोकतंत्र के महापर्व
देश की अखंडता एवं एकता के प्रतीक
गणतंत्र दिवस
की आप सभी को
हार्दिक शुभकामनाएं
26 JANUARY REPUBLIC DAY Celebration
ANAND S. RAWAT
GENERAL MANAGER
(PROCUREMENT & ADMINISTRATION)
Mob.: 9811227705 | Ph.: 011-41403002 | 43021640, 45678348
420, 2nd Floor, Functional Indl. Estate Patparganj Industrial Area, Delhi -92
E-mail: almonard.del@gmail.com | anand_rawat101961@yahoo.com
Website: www.almonard.co.in

Happy Independence Day
26 JANUARY REPUBLIC DAY Celebration
GARUD ADVERTISERS & PRINTERS
(A House of Complete Advertising & Printing)
NEERAJ ABROL
9811478032
9811478022
PG-12, Park Grandura Market, Sector-82, Greater Faridabad-121002
garud1.adv@gmail.com
visit : 3s the3s.in
"http://revolvingtime.com'
Spl.in : Bulk Order of T-Shirts, Caps & Jacket

HAPPY REPUBLIC DAY
Narinder Kalra
आ र ती
Artee traders
Authorised Distributor for Haryana:
ALMONARD Industrial & Domestic Fans
SHOP : 2A/109, N.I.T. FARIDABAD-121001 (HARYANA)
Mob. : 9990002515, 9868845255 Off.: 8368427749
E-mail : arteetraders@gmail.com

26 JANUARY REPUBLIC DAY Celebration
आप सभी को
गणतंत्र दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएं
कृत्यानंद सिंह
समाजसेवी एवं उद्यमी, फरीदाबाद

(M.) 9810733901
Image Studio
PHOTOGRAPHY
Shop No.-162, HUDA Market, Sector-8, Faridabad
E-Mail : imagedigitalstudio162@gmail.com
- Wedding Photography
- Cinematography
- Corporate Photography
- Product Photography
- Candid Photography
- Any type of other events
Like us on :
@imagestudio___photography
@imagestudio5736